
कविकुलगुरु - कालिदास - संस्कृत - विश्वविद्यालयः

मुहू॰
१

श्रीगणेशाय नमः॥ गौरीश्रवःकेतकपत्रभंगमाकृष्य हस्तेन
ददन्मुखाग्ने विघ्नंमुहूर्त्ताकलितद्वितीयदंतप्ररोहोहरतु द्विपा
स्यः॥१॥ क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भं॥ अ
नंतदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्त्तचिंतामणिमातनोति॥ २॥ तिथीशा
वह्निको गौरीगणेशोहिर्गुहो रविः॥ शिवो दुर्गांतको विश्वहरिःका
मःशिवशशी॥ ३॥ नंदाच भद्राचजयाचरिक्तापूर्णेतितिथ्यो

| तिथि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईश | अग्नि | ब्रह्मा | गौरी | गणेश | नाग | स्कंद | रवि | शिव | दुर्गा | यम | विश्वे | हरिः | काम | शिव | चंद्रः |

ध्यसत्ता॥ शितेंशि
त्तसमाधमा
भौमार्कि
नंदाभ
याच रिक्ताभद्रापूर्णासंज्ञामृताकीर्त्त॥ यांम्यंत्ता[illegible]वै
गांज्येष्ठांत्यं रवेर्दग्धभं स्यात्॥ ५॥ षष्ठ्यादितिथियो
बुधे॥ सप्तम्यार्के धमाषष्ठ्यादीद्या ३॰ माम्बरद

२

ष्टमी ८ भूता १४ विधु ३० स्तये पूर्णो सेवेत नातैलपलेषु
रं रतम् नाभ्यंजनं विम्वा १३ दशा १० द्विके २ तिथौ धात्री
फलैः स्नानममा ३० द्वि ७ गो ९ वसत ७ सूर्ये १२ सा ११
पंचो ५ ग्नि ३ रसा ६ ष्ट ८ नंदा ९ वेदो ४ गैसप्ता ७ श्वि
२ गजो ८ क ९ शैला ७ सूर्यो १२ ग ६ सप्तो ७ रगा ८
गो ९ दिगी १० सा ११ दग्धा विख्याता बहुतासना[illegible] ८ श्च
सूर्यादिवारे तिथियो भवंति मघा विशाखा शिव मूल वह्नि आर्द्रा
ब्रा स्यंकरो ऽ र्कादिम घंटका श्च शुभे विवर्ज्या गमने त्वच

| वार | र | चं | मं | बु | गु | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अधमतिथि | नंदा | भद्रा | नंदा | जया | रिक्ता | भद्रा | पूर्णा |
| जन्म | भर | चित्रा | उषा | धनि | उफा | ज्येष्ठा | रेवती |
| नदग्धा |  |  |  | ९ | ८ | ७ | ६ |
| ककुच | १२ | ११ | १० |  |  |  |  |

स्पं ९ भाद्रे चंद्रे १ दशो २ नभ
स्यन्नले ३ नेत्रे २ माधवे द्वाद
शी पौषे वेद ४ सरा ५ इषे दशा १०
शिव ११ मार्गे द्वि ७ नागा ८ मघौ

मुहू॰ २

| वारादिक | र | चं | मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दग्ध | १२ | ११ | ५ | ३ | ६ | ८ | ९ |
| विषाख्य | ४ | ६ | ७ | २ | ८ | ९ | ७ |
| हुताशन | १२ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| यमघंट | मः | वि | आर्द्रा | मूः | कृ | रो | ह |

गो ९ घ्रो ८ चोभयपक्षगास्त्वतिथयः
शून्याबुधैः प्रकीर्तिता। उर्ज्जे स्वाढ
तपश्य शुक्त पशी क ह्मेशरां पगा
द्विध्ययः ४ ॥ १० शाका १४ पंच
५ शिते शाको १४ ज्ञा ७ ग्नि ३ वि
श्वा १३ रसा ६ क्रमात् तथाग्निघं
शुमे सार्प द्वादश्यां वैश्व मादिमे ११ अनुराधा द्वितीयायां पंच
म्यां पित्र्यं भं तथा। उत्तराश्च तृतीयायां मे कादश्यां चरोहिणी १२
स्वाति चित्रा च यो दश्यां सप्तम्यां हरिरा ह्यसे। नवम्यां कृतिकाष्ट
म्यां पूभां रवाढ्याच्चरोहिणी ॥ १३ ॥ कद्रग्भमे वाष्टव्यां विश्वे
ज्यो भेगवासवो। विश्वो कृतिपांसि पो ह्मे: अजपाद ग्नि पित्रभे
१४ ॥ चित्रा द्वीशो शिवांस्व कौकृतिम
लेयमेंद्रभे ॥ चैत्रादिमास शून्याख्या तार
वित्तविनाशदा ॥ १५ ॥ घटो ११ शुबो १२

| तिथयः | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शून्य | ७ | ५ | ३ | ९ | ४ | ९ | २ |
| लग्नसू | १० | १० | ६ | ४ | ५ | १२ | १२ |

पुफा ४ धनिष्ठा आर्द्रा ३ कृत्ति ४ रेवति ४ पुभा उषा

पुष्य विशा मेघ स्वा राम हुल्लो २

| मासाद्यं | चै | वै | ज्ये | आ | श्रा | भा | आ | का | मा | पौ | मा | फा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र शून्यः | अस्तः रोहि | चित्र स्वाति | उत्त राषुष्य | उफा धनि | उषा श्रव | सतः रेवती | पू भी | कृति मघा | चित्रा विसा | आ द्राश्व नीहस्त | श्रव मूल | भरनी ज्येष्ठा |
| राशिशून्य | कुंभ | मीन | वृष | मिथु | मेष | कंन्या | वृश्चि | तुला | धन | कर्क | मक्र | सिंह |

गौः॥२॥मिथुने
३॥कुंमेष॥१॥
कंन्या॥६॥लि
च॥तौ७॥लि
नः॥धनुःक
कौं मृगसिंह

चैत्रादौ शून्यराशय॥१६॥पक्षादितिस्त्वोजतिथौ घटे नौ ७॥१०॥मृ
गेंद्र नक्रौ ५॥१०॥मिथुनांगने च॥३॥६॥चापें दुभे ७॥४॥कर्क ह
री ४॥५॥हयांत्यौ गोंत्यौ च नेष्टे तिथि शून्य लग्ने॥१७॥नारद॥
तिथयो मास शून्याश्च शून्य लग्नानि यान्यपि मध्यदेशे विवर्ज्जानि
न दूष्यान्यांतरेषु च॥१८॥पङ्गवंधकानि लग्नानि मासशून्यश्च
राशयः॥गौडमालवयोस्त्याज्य अन्यदेशे न गर्हिता॥१९॥वर्जये
त्सर्वकार्येषु हस्तार्कं पंचमी तिथौ॥भौमाश्विनी च सप्तम्यां षष्ठ्यां

मू॰चिं॰

२

चंद्रेंदवंतथा॥२०॥बुधानुराधामघम्यां दशम्यांमगुरेवती॥नवम्यां
चगुरुपुष्यच्चैकादस्यांसनिरोहिनी॥२१॥ग्रहप्रवेसेजात्रायांविवाहे
चयथाक्रमं॥भौमाश्विनीसनौवृत्तीगुरुपुस्यंविवर्जएत॥२२॥आ
नंदकालदंडा २॥रव्यो धू॥३॥मो धा॥४॥ता चसौम्या॥५॥यो॥६॥ध्वांक्ष॥छ
के॥७॥तुश्च श्रीव ८॥सोवज्र॥९॥कं मुद्र॥१०॥रत्त था॥२३॥छ॥११॥त्रंमि
१२॥त्रंमानसा॥१३॥स्वंपद्मा॥१४॥लुंब॥१५॥कंक मात्त॥उत्पातु॥१६
मृ॥१७॥तुकिल॥१८॥कानैसिधि॥१९॥शु॥२०॥मोमृत्ता॥२१॥ख्वामु॥२२
सलंग दा॥२३॥ध्य॥मातंगरक्षस्यचरस्थिरारव्यःप्रबुधनामफलदस्व
नाम्नां॥२४॥दाश्वादर्केमृगादिंदौशार्प्याद्भौमेकराद्बुधे॥मैत्रा द्गुरोभगो

नरव्य

राम

॥३॥

वैस्वाद्गुएपामंदेच्चवारुणान्न॥२५॥ध्वांक्षेवज्रेमुद्ररेच्चेघु॥५॥नाड्योवज्या
वेदा॥४॥पद्मालुंवेगदेस्वा॥७॥धूम्रेकानैमोशाले॥७॥न्हृदयांराह्वे॥२॥
रक्षोमृत्यौत्यातुकालश्चसर्वे॥२६॥सूर्यभाद्वदा॥४॥गो॥९॥तको॥३॥द्विः॥१०॥

आनराधा॥४

5

त्रिस्व ॥१३॥ नख ॥२०॥ संमिते ॥ चंद्रर्क्षे रवियोगाः स्युः दोषसंघविनाशकः ॥२०॥ सूर्येर्के मूलोत्तरपुष्यदास्रं चंद्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमित्रं ॥ भौमेश्वहिर्बुध्न्यकृशानुसार्प्यं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचांद्रं ॥२१॥ जीवेंत्यमैत्राश्व्यदितीज्य

उभा

| ० | आ | का | धू | प्र | सौ | ध्वां | के | श्री | व | मु | छ | मि | मा | प | लु | उ | म | का | सि | शु | अमृ | मु | ग | सा | रा | चर | स्थि | प्रवृः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| र | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | उ | अ | अ | ध | स | पू | उ | रे |
| चं | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | उ | अ | अ | ध | स | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो |
| मं | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | उ | अ | अ | ध | स | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु |
| बु | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | उ | अ | अ | ध | स | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ |
| बृ | अ | ज्ये | मू | पू | उ | अ | अ | ध | स | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि |
| शु | उ | अ | अ | ध | स | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू |
| श | श | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | उ | अ | अ | ध |

धिष्ण्यं शुक्रेंत्यमैत्राश्वदिति स्रवो भं ॥ शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानिः सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ॥२२॥ हीशातोया द्वादस वात्सौ ह्म भाच्च व्रस्मात्पुष्याद

मू॰चिं॰

॥४॥

यमक्षीच्युगा४ क्षैः उत्पाताख्यो मृत्युकानौ चशिधिर्वारे कौ घे यत्फलं न मतुल्यं ॥२०॥ कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्थाभवारजाः । हूनवंगख शेषेव वर्ज्या स्तत्तयजातथा ॥२१॥ सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तनुलचावार्द्धे निशान्हो घटीः त्र्यंशां ॥२०॥ वैकुनवांसकं ग्रहणतः पूर्वा दिनानां त्रयं उत्पातग्रहतो हत ७ हानिशुभदोत्पाते श्च दुष्टं दिनं षण्मासं ग्रहभिन्नं भंतपज्ज शुभेयोऽर्द्धं तयोत्पातभं ॥२२॥ नेष्टं ग्रहर्क्षं शकलार्द्धपादग्रासे क्रमात्त ई र्क गुणे ॥२०॥ दु१ मासान् पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रि ॥२॥ षण्मास्त्रस्ते स्तगेवाभ्युदिते ई खंडे ॥२३॥ जन्मर्क्षे मासतिथ्योः व्यतीपातभद्रा

| र | चं | मं | बु | बृ | शु | श | सप्तवाराः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वि | पू | ध | रे | रो | पु | उ | उत्पातजोग |
| अ | उ | श | अ | मृ | श्ले | ह | मृत्युजोग |
| ज्ये | अ | पू | भ | आ | म | चि | कानजोग |
| मू | श्र | उ. | कृ | पु | पू | स्वा | सिद्धिजोग |

| र | चं | मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ह | अभि | अभि | रो | रेव | र | अ |
| मू | रो | उआ | अनु | अनु | पूफा | रो |
| उफा | म | कृ | ह | अश्व | स्वा | स्वा |
| उषा | पु | अ | कृ | पु | अभि | ० |
| उभा पुषा | भ श्र | स्व ० | पुन मृ | श्र | श्र | ० |

| र | चं | मं | बु | बृ | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | १२ | ४ | ८ | ६ | ५ | १२ |
| १४ | १२ | १० | ८ | १६ | ४ | २ |
| ६ | ४ | २ | १४ | १२ | १० | ८ |
| ८ | ६ | ४ | २ | १४ | १२ | १० |
| १।८ | ४ | २।४ | ४ | १५।१ | ६।५ | ६।१७।१८ |
| १० | ८ | ६ | २ | १४ | १ | २ |

वैधृत्समापित्रिदिनानितिथिक्षयार्द्धरात्रे द्वौ ॥ न्यूनाधिमासशकुलिकप्रहरा

राम

॥४॥

र्धपातविष्कुंभवज्रघटिकात्रयमेववर्ज्यं ॥२४॥ परिघार्धं पंच ५ शूले

पुष्पर गंडांतगंडयो । व्याघातेनव ९ नाडश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ॥२५॥

| सर्वग्रास मास | अर्धग्रास | पादग्रास | ग्रस्तास्त दिवादि | ग्रस्तोदय पश्चिमदिन |
|---|---|---|---|---|
| ६ | ३ | १ | ३ | ३ |

वेदां ४ नगाद्रीषु चानवा ॥ ९ कैं ७ ॥१२॥ द्वा ॥१४॥

पक्षरं घाति यो त्यजेत् ॥ वस्त्रं चा का ९ मनु १४ तत्त्वा ॥ २५॥ शा ॥१०

शा रा ५ नाडी परा सुभाः ॥३६॥ कुलिककीलवेलाच यमघंटश्च कं

टकः । वारादिद्विघ्नेकमात् मंदे बुधे जीवे कुजे क्षणाः ॥३७॥ सूर्ये षट्दि

स्व रा ७ नाग चा दि १० अश्वा १४ नु मिता श्चंद्रे व्धि ४ षट् ६ कुंज च

रांका ९ र्क १२ द्विस्व १३ पुरंदराः १४ क्षितिसुते द्वि २ गन्य ३ व्धि

४ तर्कः ६ दिश १० ॥ शौमेघ्य २ व्धि ४ गजां ८ चा का ९ दि १० अ

१४ नु मिता जिवे द्वि २ षट् ६ भास्क १२ रा शक्रा १४ स्त्यास्ति

था १५ यः कला १६ श्च भृगुजे वेदेषु पातकीदीग्रहा ९ ॥ ३८ ॥

॥४॥

मु॰ चिं॰ ॥५॥

दि॰ १० भास्क १२ रामन १४ ॥ मिताश्च शनौ श॰ १ शि द्वि २ नागा ॥ ८
दिशो ॥ १० नव ११ दिवा १२ करसम्मिताश्च ॥ ६६ क्षणाः कुलिक
कंटक कालवेलाः स्फः श्चार्द्ध याम यमघंटगाती कलां शा ॥ ३९ ॥
विपासैरावतीतीरे शतिद्राच त्रिपुस्करे ॥ विवाहादी शुभे नेष्टं हो
लिकाष्टाकृदिनाष्टकं ॥ ४० ॥ मृत्यु कर्कचदग्धादिनिंदौ शास्ते
मुभान्जगु ॥ केचि द्यामोत्तरं चान्यजात्रायामेव निंदितान् ॥ ४१
अयोगेस्तु योगो पि चेत्स्यात्तदानीमयोगं निहंत्यैष सिद्धितनो
ति ॥ परे लग्न शुध्या कुयोगादि नाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शा
स्तं ॥ ४२ ॥ मूलैः पूर्वार्धे घमी पंचदश्यो भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परा

| ४ | ८ | ११ | १५ | ३ | ७ | १० | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | २ | ७ | ४ | ८ | ३ | ६ | १ |
| ६ | १ | ६ | ३ | ७ | २ | ५ | ४ |

र्धे ॥ कृष्णेत्पार्धे स्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वे वं
भागे सप्तमी शंभुतिथ्यो ॥ ४५ ॥ पंचापा द्विार
द्रि ७ ॥ कृता ॥ ४ ॥ ष्टा ८ ॥ राम ३ रस ६ ॥ भूः १

सीयां
राम
॥५॥

र्यामादि घच राराष्ट॥ विष्टेरास्यमस्त ऊर्जेचा॥दु॥१॥रसा॥दी॥रामा॥२
द्वि॥७॥श्वि॥२॥बा॥प॥नौ॥व्या॥४॥पु॥यामे षंपि घटीत्रयं शुभक
रं पुच्छं त घावासरे विष्टिस्त्विप्यपरार्धजा सुभकरी रात्रौ तु पूर्वा
र्धजा॥४४॥कुंभांत्यालि हरौ मर्त्ये॥११॥चा॥५॥१२॥त्रिस्वर्गे जाश्व
तुष्ट्ये॥१॥२॥३॥४॥स्त्रीधनुर्जूकनक्रे॥६॥९॥७॥१०॥८॥घोमद्रा
तन्नैव तत्फलं॥४५॥वाप्यारामतडागकूपभवनारंभः प्रतिष्ठा
व्रतारंभोत्सर्गवधूप्रवेसनमहादानानि सोमाष्टके गोदाना

| विष्टितिथ्यादि | ४ | ८ | ११ | १५ | ३ | ७ | १० | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विष्टौया मासे | ५ | २ | ७ | ४ | ८ | ३ | ६ | १ |
| विष्टघट्यादिके | ८ | १ | ६ | ३ | ७ | २ | ५ | ४ |

ग्रयणप्रपाः प्रथमकोपाकर्म वेद
व्रतं नीलोद्वाहमथातिपन्नसिसु
षंसंस्काराः सुरस्थापनं॥४६॥दीक्षा
मौंजीविवाहे मुंडनमपूर्वं देवती
र्थेक्षणं सन्यासाग्निपरिग्रहौ न्रपतिसंदर्शाभिषेकोगमं॥चा

मु.चिं.
॥ ६॥

तुर्मास्य समावृत्ती श्रवणयोर्वेधं परिक्ष्यां त्यजेत् वृधत्वास्तशिशुत्व
इज्यसितयोर्न्यूनाधिमासे तथा ॥४८॥ अस्ते वर्ज्ये सिंहनक्रस्थजी
वे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे ॥ गुर्वादित्ये विश्वा १३ घस्रेपि पक्षे
प्रोचुं सद्यदंत रत्नादिभूषं ॥४९॥ सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टो
घ गोदोत्तरतः स्वयावत् ॥ भागीरथीयाम्यतटे च दोषे नान्यत्र देशे
तपनेपि मेषे ॥ ५०॥ मघादि पंच पादेषु गुरुः सर्वत्र निंद्यतः ॥ गंगा
गोदांतरे हित्वा सेषार्क्रि न दोषकृत् ॥५१॥ मेषेर्के शुभो द्वारः गंगागोदां
तरेपि च ॥ सर्वैः सिंहगुरौ वर्ज्यं कलिंगे गौडे गुज्जरे ॥५२॥ रेवा पूर्वे गंड
की पश्चिमे च शोनस्योदिग्दक्षिणे नीच इज्ये वर्ज्यो नायं कोकणे माग
धे च गौडे सिंधो वर्जनीयः शुभेषु ॥५३॥ गो २ जां ७ त्या ९ रा कुं ११ प
मे.तर भेतिचारे गो नो पूर्वराशिं गुरुरेति वक्रित ॥ तदा विलुप्ता
दृहातिनिंदतः शुभे शुरे वा सुरनिम्नगांतरे ॥५४॥ पादोन रेखा पर

राम
॥ ६॥

दु

पूर्वे योजनैपलैर्युतो नास्ति यद्यो दिनार्द्धितः॥ ऊन्नाधिकास्तद्वि

वरोद्भवैपलैरुर्द्धं तथाघो दिनयः प्रवेसनं॥५५॥ वाराद्ये घटिका

द्वि २ घ्नास्व ५ छ्ह्र्च्छेषवर्जिता॥ सो १ का २ स्थानगै ७ काल होरेसा

र्द्धिनापाक्रमात्‌ ५६॥ सूर्जेभृकवुधश्चंद्रां मंदजीवकुजाक्रमात्‌

यो वारो यत्र दिवसो तदादिगण्ये क्रुधः॥५७॥ वारे प्रोक्तं कालहोरा

सुतस्यधिष्ले प्रोक्तं स्वामिति ध्यंसके स्यात्‌॥ कूर्यादिकुस्तूलचिंतं

नीयाक्षरो घूनै वोलं ध्यः पारिघश्चापि दंड॥५८॥ मन्वाधाग्निति

थौ ३॥१५॥ मघौ तिथिरवौ॥१५॥१२॥ ऊर्जे भुचौ दिकृतिथि॥१०॥१५

ज्येष्ठे तेचतिथि १५॥ त्सिषेनवा ९॥ तपस्सा ७॥ सद्दस्ये सिवा॥११॥

भाद्रेग्नि ३॥ स्वसितेत्वमाघ॥३०॥८॥ नभसः कल्येयुगाद्यासिते॥ गो

ग्नि ९॥३॥ र्वाक्रुलराधयो र्मदनदिदशौ॥१३॥३०॥ भाद्रमाघासिते

५९॥ इतिश्री[illegible]नंतसुतदैवज्ञ[illegible] विरचिते मुहूर्तचिंतामनौ

कं ४

मु·चिं·

॥१॥

शुभाशुभप्रकरणं प्रथमं ॥१॥ नासत्यांतकवह्निधातृशशभृद्रुद्रा
दितीज्योरगा ॥ ऋक्षेशाः पितरो भगोर्यमरवित्वष्ट्राशुगा श्वक्र मातु
शक्राग्निरवलुमित्र शक्रनिस्रतिः क्षीराणि विश्वे विधोगोविंदोव
सु[illegible]पाजैकचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधः ॥१॥ उत्तरात्रयरोहिणीभा
स्करश्च ध्रुवं स्थिरं ॥ तत्र स्थिरं बीजगेहशांत्यारामादिसिद्धये ॥२॥
स्वात्यादित्ये श्रुते स्त्रीणि श्चंद्र श्चापि चलं चरं ॥ तस्मिन् गजादिकारो
हवाजिकागमनादिकं ॥३॥ पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिध्यति ॥४॥ विशाखा
ग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतं ॥ तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृ
षोत्सर्गादिसिद्धये ॥५॥ हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा
तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकं ॥६॥ मृगांत्यचित्रामि
त्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ॥ तत्र गीतांबरक्रीडामित्रकार्यविभूषणं

पास्य

नं

राम

॥७॥

७ मूलेंद्रार्द्राहिभं सौरी स्तीक्ष्णदारुणसंज्ञकं ॥ तत्राभिचारघातो
ग्रभेदाः पशुदमादिकं ॥७॥ मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वा
स्यमार्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवं ॥ तार्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादितिः ज्येष्ठ
श्विभानि दशकृत्यं मेषु शस्तं ॥८॥ पौष्णध्रुवाश्विकरपंचकवा
शवेज्यादित्ये प्रवालरदशंखसुवर्णवस्त्रं ॥ धार्जं विरिक्तसनिचं
द्रकुजेज्ञिरक्तं नौमे ध्रुवादितियुगेशुभागानदध्यात ॥ ॥ वस्त्रा
णां नवभागकेषु चन्चतुष्कोने ऽमराराक्षसा ॥ मध्यत्र्यंशगता नर
सुशाद्दशे पासेच मध्यांशयोः ॥११॥ दग्धे वा स्फटिते वरे नवतरे पं
कादिलिप्तीर्नशद्रक्षांशे न सुरांशके शुभमसत्सर्वीशके प्रांततः ॥
१२॥ विप्राज्ञयास्तथोद्वाहे राज्ञा प्रीत्यार्पितां च यत् ॥ निंदेपि धिसेवा
राद्दौ वस्त्रधार्जं प्रगुर्बुधाः ॥१३॥ राधामूलमृदुध्रुवक्षे वरुणक्षि
प्रैर्लत्ता पादधारोपो सौ नृपदर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्रः श्रवोवासवे ॥

तीक्ष्णोग्रांत्युपभेषुमद्यमुदितं क्षिप्रात्यवह्निं द्युभादित्येंद्वांबुप
वासवेभ्युद्दिगवांशास्त्रः क्रयोविक्रयः॥ ९३॥ लग्नेशुभेचाष्टमशु
धिशंयुतेरक्षापमृत्स्नांनिजयोनिभेचरे रिक्ताष्टमीदर्शकुजस्य
वोध्रुवं त्वाष्ट्रेसुयानांस्थितिवेशनं नसत्॥ ९४॥ भैरवज्यंसल्लघुमृ
दुचरमूलभेद्व्यंगलग्नेशुकेंद्रीज्ये विदिचदिवसेचापित्तेपीरवेभ्वशु
द्धेरिष्फ १२ द्युने ७मृति ८ग्रहेसतियौनोजनेभैस्त्रचीकर्मत्वदिति
वसुभेत्वाष्ट्रमित्राश्विधिस्से॥ ९५॥ क्रियर्क्षेविक्रियोनेष्टोविक्रियर्क्षेक्रि
योपिवा॥ पौसांबुपाश्विनीवातास्रवश्विनाक्रयेशुभा॥ ९६॥ पूर्वाद्वीरा
क्षशानुशार्पयमनैकेंद्र॥ ९॥४॥७॥१०॥द्वि २ कोने ९।५।पासुभैःघट
त्यायेः ६।३।११ घसुभैर्विनाघटतनुंसविक्रयःसतिथौ॥ रिक्ता ९।४।
१४ न्नौमघटान्विनाचविपिर्णिमैत्रध्रुवक्षिप्रभैर्लग्नेचंद्रसितेव्यया
ष्ट १२।८ रहितेपापैःशुभैर्व्यायखे॥ २।११।१०।९७॥ क्षिप्रांतवह्निंद्युमरु

स

षष्ठं

ज्जलेशादित्येषु रिक्तारदिनेप्रशस्तं॥ स्याद्दाजिकृत्यंज्वयहस्ति
कार्यं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान्॥१८॥ स्यान्मूषाघटनं त्रिपुष्कर
चरक्षिप्रध्रुवेरन्नपुकृततौ क्ष्णोगनविहीन भेरविकुजेमेषालिसिं
हेतनौ॥ तन्मुक्तासहितं चरध्रुवमृदुक्षिप्रे शुभे सत्तनौ तीक्ष्णोग्रा
ख्यिमृगे द्विदैवदहने शस्त्रं शुभे घट्टितं॥१९॥ मुद्रानांपातनंसध्रु
वमृदुचरभे क्षिप्रभैर्विंदुशौरे तं ष्यं पूर्णाजियाख्येन च गुरुसुगुजा
स्ते विलग्ने शुभे स्यात्॥ वस्त्रानांक्षालणंसहस्तुहयदिनकृत्यं च का
दित्यपुष्येनो रिक्तापर्वषष्ठीपित्तदिनरविजत्तेषु कार्यं कदापि॥२०॥
संधार्यां कुंतवर्मेषसैन्सरः कृपाणासिपुत्र्यो विरिक्ते शुभे ज्मार्केद्वि
मैत्रे ध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे॥ स्फलग्ने हि स्थिराख्ये॥प
२११८ राशिनिचशुभहृष्टे शुभैः केंद्रगे स्यात्योगः सय्यासना
देध्रुवमृदुलघुहर्यंतकादित्यह्रष्टः॥२१॥ संधाक्षंवसुपुष्यधानिज

लभद्वीसांत्यभार्यम्रभंमंदाक्षंरविविस्वमैत्रजलपाश्लेस्वाश्विचांद्रंत्रवेत्र
मध्याक्षंशिवपेत्रजैकचरणात्वष्टेंद्रविष्ण्यंतकंस्वार्क्षेस्वात्यदितिश्रवोदह
नभदितुर्घ्नरक्षोभमुं॥२२॥विनष्टार्थस्यलाभोध्येशीघ्रंमंदेप्रयत्नतः॥
स्यादूरेश्रवणंमध्येश्रुत्वाप्तिर्नसुलोचनेऽ॥२३॥तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रे
यत्द्रव्यंदत्तंनिवेसितं॥प्रयुक्तंचनिविष्टंचविष्ट्यांपातेनचाप्यते॥२४
मित्रार्कध्रुववासवांवुपमघात्तोयांत्यपुष्येंदुभिः॥पापैर्हीनिवलैस्तनौ
१सु२गुरौज्ञेवाम्भगोस्वे॥१॥विधो॥आप्येसर्वजलाशयस्यखननं
व्योमोमघेसेंदुभे॥स्तोर्न्हत्यांहिवुके॥४॥सुभेस्तनु१ग्रहेशेज्ञेत्ररासौ
सुभं॥२५॥इतिजलाशयखननं॥क्षिप्रेमैत्रेविस्तितार्केज्यवारेशो
भेलग्नेकेंकुजेवारवलाभे॥१०॥११॥योनेमैत्र्यां राशियोश्चापिमैत्र्यां
सेवाःकार्यस्वामिनःसेवकेनः॥२६॥इतिसेवायां॥स्वात्यादित्यमृदु
क्षिदैवगुरुभेकर्णत्रियाश्वेचरेलग्नेधाप्यमेसुतापाद्यचसुक्षिसहिते

द्रव्यःप्रयोगःशुभः॥ नारेयाद्यमृणांतु संक्रमदिने वृधौ करे केन्द्रि
यतः॥ तद्दंशे शुभ्रभ वेद्दणंनचवुधे देयं कदाचिद्धनं॥ २७॥ इति
द्रव्यप्रयोगः॥ मूलाँद्वीशामघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रै र्विनार्के शनि
पापैर्हीनवलैर्विधौ जलतत्त्वे भ्रुकेविधौ मांशले॥ लग्ने देवगुरौ
हलप्रवाहनं शस्तं नस्तिं हे॥ ५॥ घटौ॥ ११॥ कर्की॥ ४॥ जे॥ १॥ णा॥ १०॥ घटे
१॥ तनौ दिनकरं रिक्ताशुभ स्पांतथा॥ २८॥ इति हलप्रवाहः॥ ए
धे वस्कृति वारुणा दितिविशाखोडूनिभौमं विना वीजोप्तिर्गदिताशु
भात्तगुभत्तोऽशा च ग्निं ३ दु १ रामे ३ दवः॥ रामैं ३ द्वा १ ग्नि
३ युगां ४ न्पसच्छुभकराणफलै हलेकौ जिताद्भात् रामा ३ ष्ट च
नवा ९ ष्ट ८ भानि मुनिभिः प्रोक्तान्पसत्संतिचा॥ २९॥ इति वी
जवापनं॥ त्ता॥ स्वान्मित्र कन्याद्वयेऽवुपलघुभ्रो त्रेशि रामोक्षणं भौ

मु.चिं.

॥१०॥

मार्कीज्यदिने विरिक्तचवमनाद्ये स्याद्बुधार्की विना॥ मित्रक्षिप्रच
रे ध्रुवेरघिसुभाहेलग्नवर्गे विदोजीवः स्थापितनौ गुरौ निगदि
ताध्वर्मक्रियातद्दले २०॥ इति धर्मक्रियायां॥ तीक्ष्णाजपाद
करवह्निवसुश्रुतींदुस्वातीमघोत्तरजलांतकतक्षपुष्ये॥ मंदार
रिक्तारहितेदिवसेतिसस्ता धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरमे विल
ग्ने॥२१॥ इति धान्यच्छेदः॥ त्यक्ताष्टभूतशनिविष्टिकुजान्जनुर्भ
माशौमृतौरविविधूअपि भानि नाद्यः॥ ध्रौ गोचरे तनुलवे शशिजी
वताराशुद्धौकरादितिहरिद्विकपे परीक्षा॥२२॥ भाग्यार्यमश्रुति
मघैंद्रविधात्रमूलमैत्रांत्यमेषु गदितं कनमर्दनं सत्॥ मूला
जपादविधितः क्षसतार्यमक्षेसस्यस्परोपनमिहाकुजौ वि
नासत्॥२३॥ इति धान्यमर्दनसस्यारोपनं॥ मित्रोग्ररौद्रभुज
गेंद्रविभिन्नमैयुक ४ कीज १ तोलि ७ रहितेचतनौ सुभाहे

घिस्रे १

राम

॥१०॥

19

धान्यः स्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्यदीसेंद्रदस्रचरभेषु च धा
न्यवृद्धि २३ ॥ इति धान्यस्थितिः ॥ क्षिप्रं ध्रुवान्त्यचरमित्रमघा
मृशस्तं स्पाच्छांतिकं सह च पौष्टिकमंगलाभ्यां ॥ खेर्के विधौ सुख
गतेत्तनुगे गुरौ नो मेषादिदुष्टसमये शुभदं निमित्ते ॥ २४ ॥ सूर्ये
भाद्विनिभे च चंद्रे सूर्ये विधुक्त पगवः ॥ चंद्रारेज्यागुशिखिनो न
ष्टा होमाहुति खले ॥ २५ ॥ सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणे
ऽभ्रे भुवि वह्निवासः ॥ सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थना
शो दिवि भूतले च ॥ २६ ॥ इति होमाग्निवासः ॥ नवान्नं स्पा
च्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तमो शुभं ॥ विना नंदाविषघटी मधपौषा
र्किन्मिजानू ॥ २७ ॥ इति नवान्नभक्षणं ॥ जांमपत्रयं विसार्वे
दस्राप्यपित्र्यं सर्पभिन्नभे ॥ भृगवीज्यार्कदिने नौकाघटनं सत्तनौ
शुभं ॥ २८ ॥ इति नौकानिर्माणं ॥ मूलाद्राभरणीपित्र्यमघे सौ

मु॰चिं॰

॥२२॥

स्पे घटे तनौ ॥ शुखे ४ शुक्रे ८ छाचमे शुद्धे सिध्यि र्थी रामचार्यो
३९ ॥ व्यंत्यादितिध्रुवमघानिल सर्प्प धिष्ण्ये रिक्ते ति थौ चरतनौ
विकविंदुवारे ॥ स्नानं रुजा विरहितस्सजनस्य सस्तं हीने विधौ
खल खगै र्भवे ११ केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ कोणे ॥ ९ ॥ ५ ॥ ४० ॥ इति श्री
रोगी स्नानं ॥ मृदुध्रुवक्षिप्रा चरेज्ञे गुरौ वा खल लग्नगे ॥ विधौ ज्ञ
जीववर्गस्थे सिल्पविद्या प्रसस्यते ॥ ४१ ॥ इति सिल्पादि ॥ शुरेज्य
मित्रभाग्येषु चाष्टम्यां तैतिलेहरौ ॥ शुक्रद्द्वेतनौ सौम्य वारे संधा
नमिष्यते ४२ ॥ इति शंधानं ॥ व्यया १२ ष्ट चशुद्धोपचये ३
६ ११ १० लग्नगे शुभदायुते ॥ चंद्रे ३ ॥ ६ ॥ दशा १० या ११ ॥
स्थे सर्वारंभ प्रसिध्यति ॥ ४३ ॥ इति सर्वारंभ ॥ स्वातींद्रपूर्वाश्विवसा
र्प्पन्ने मृतिज्वरे रेतप मैत्रे स्थिरता भवेद्रुजा ॥ याम्य श्रवो वारुण तक्षभै
शिवा ११ घस्रादि पक्षो ॥ १५ ध्विपार्कवासवे ॥ ४४ ॥ मूलाग्नि दास्रे

प धनिष्ठा

रामा

॥२२॥

नव ॥ ९ ॥ पित्र्यमे नखौ ॥ २० ॥ बुध्न्यार्यमेज्यादितिधातृभेन गा ॥ ७ ॥
माशे ॥ १२ ॥ ६ ॥ २० ॥ ब्रुवैश्वेषपयमाहिमूलभे ॥ मिश्रेशपित्र्ये फणिंदर्श
ने मृतिः ॥ ४५ ॥ रौद्राहिसर्पेकांबुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु पापवा
रे । रिक्ताहरिस्कंददग्धा दिने चरोगे शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः ॥ ४६ ॥
भद्रातिथीरविजभूतनयार्कवारे द्वीसार्यमाजचरणं दितिवह्नि
वैश्वे ॥ त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्धुवं
वैश्वे ॥ त्रैपुष्करोभवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्ध्रुव
तक्षचांद्रे ॥ ४७ ॥ क्षिप्राहिमूलेंद्रहरीशवायुभे प्रेतक्रियास्यात्रमिष
कुंभगे विधौ प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमं त्यजेच्छय्यावितानं गृहगोपनं
दिच ॥ ४८ ॥ शुक्रासार्कबुदर्शभूतमदने ॥ १३ ॥ नंदासु तीक्ष्णोग्र
भे पौष्णे वारुणभे त्रिपुष्करदिनोन्मूनाधिमाशो ६ यनो ॥ याम्येंद्व
त्पत्तेरैश्च पातपरिघेदेवेज्यशुक्रास्तके नंदावैधृतयोशवपति
सूतेर्दाहोनपक्षेसिते ॥ ४९ ॥ जन्मः ॥ १ ॥ १० ॥ १९ ॥ प्रत्यरितारयो ॥ ५ ॥ १४ ॥

मु॰ चिं॰

१२

२६ ॥ मृति ॥ ८ ॥ मुरवां ॥ ४ ॥ से ॥ १२ ॥ ज्ञेचकर्तुर्नसन्मध्योमित्रंमगादितिध्रुवविशाखाद्यंधिष्ण्येमेतेपिच ॥ अथो ८ केज्यविधोर्दिनेक्षतिकरस्वात्यग्निपुष्येतथाज्ञाशोचांतपरतोविचार्यमखिलंमध्येयथासंभवं ॥ ५० ॥ अभुक्तमूलंघटिकाचतुष्टयंज्येष्ठांतमूलादिभवंहि ॥ नारदं ॥ वशिष्ठ एकद्विघटीमितंजगौबृहस्पतिस्त्वेकघटीप्रमाणं ॥ ५१ ॥ अथोचुरन्येप्रथमाष्टघट्योमूलास्यशाक्रांतिमपंचनाड्यः ॥ जातंशिशुंतत्रपरित्यजेद्वामुखंपितास्याष्टसमानपश्येत् ॥ ५२ ॥ उर्जेषाढस्वर्गेसुचिंपोष्टपदेषुमाघेमूलंभुमिश्रावणेचैत्रपौषे ॥ उर्जेष्यघ स्तत्तत्तपस्यमार्गेवैशाखशुक्रेषशुन्नंचतत्र ॥ ५३ ॥ आद्येपितानाशमुपैतिमूलंपादेद्वितीयेजननीतृतीये ॥ धनंचतुर्थोस्यशुभोयशांत्यंसर्वत्रसस्पादहिभेविलोमं ॥ ५४ ॥ गंडांतंनपस्मूलपातपरिघेव्याघातगंडांतमेसंक्रांतिव्यतिपातवैधृतसिनीवालीकु

राम

॥ १२ ॥

कृ दर्शके॥ वर्जे कृष्णचतुर्दशी पुयम घंटे दग्धयोगे मृतौ विधौ स्त्रे
त्रैसोदर स्त्रे जनिर्ने पितृमे सस्ता शुभा शांतिर्ये॥ ५५॥ त्रिच्यंगपंचा ११२
ग्नि कुवेद व ह्नियः शरेषु नेत्राश्वि शरेंदु भू कृता॥ वेदाग्नि रुद्रा
श्वि यमाग्नि व ह्नियोब्ध यः शतंद्विद्वि रदां भतारका॥ ५६॥ अश्वादि
रूपं तुरगास्य यो णि क्षुरोण एना स्यमनी ग्रहं च॥ पषत्क चक्रे च वनं
चमंचः शख्याकरो मौक्तिकविद्रुमे च॥ ५७॥ तोरणं वलिनिभं च कुं
डलं सिंह पुच्छ गज दंत मंचकं॥ अश्वि च त्रिचरणाभ दर्शलौ वृत्तमं
च सयनाख्य दर्शला॥ ५८॥ जलाशयारामसुर प्रतिष्ठा सौम्यायने
जीवसितो कुमुक्ते॥ दृश्ये मृदु क्षिप्रचरे ध्रुवे स्यात् पक्षे सिते स्वर्क्ष तिथि
क्षणे वा॥ ५९॥ रिक्तारवर्जे दिवसे ति सस्ता शशांक पापैस्त्रि रसभवां
११ गं द सेस्थो॥ व्ययाष्टांत्यगे॥ १ रसत्र पञ्चरे मृगेंद्रैः॥ ५ सर्योघटे
११ युवतौ द च विलु ६० शिवौन युग्मै॥ ३ द्वितनौ च॥ ३॥ ६॥ ९॥ १२॥

देव्यक्षुद्राश्चरे ॥१।४।७।१०॥ सर्व इमे स्थिरर्क्षे ॥२।५।८।११॥ पुष्ये ग्रहा
विघ्नपयक्षसर्पभूतादयोंत्ये श्रवणे जिनस्य ॥६१॥ इति श्रीदैवज्ञान
न्तसुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्त्तचिंतामणौ नक्षत्रप्रकरणं
द्वितीयं ॥ ॥ घोरार्कसंक्रमणमुग्ररवौ हि शूद्रान् ध्वांक्षी विशो
लघुविधौ च चरर्क्षभौमे ॥ चौरान्महोदरयुतान्नपतिज्ञमैत्रे मंदा
किनी स्थिरगुरौ सुखयेच्च मंदा ॥१॥ विप्रान्ध्रुवे श्रमधनं गोनुपशूंश्च मि
श्रा तीक्ष्णार्कजेंत्यजसुखा खलु राक्षसी चे ॥ अंशो दिनस्य नृपतीन्प्र
थमे निहंति मध्ये द्विजानपि विशोपरके च शूद्रान् ॥२॥ अस्ते निशाप्र
हरके षु पिशाचकादीन्नक्तंचरानपि नटान्पशुपालकांश्च ॥ सूर्योद

ये सकललिंगीजनंच सौम्ययाम्यायनं मकरकर्कटयोनिरुक्तौ ॥ २ ॥ ष

डशीत्याननंचापनृयुक्कन्याहृषोभवेत् ॥ तुला ७ जौ १ विषुवं विष्णुप

दं सिंहालिगोघटे ॥ ४ ॥ संक्रांतिकालादुभयत्रिनाडिकाः पुण्यमताः

षोडशषोडशे वहि ॥ निशीथतोर्वाग्परत्र संक्रमे पूर्वापराहंतिमपूर्वभा

गयोः ॥ ५ ॥ पूर्वे निशीथे यदि संक्रमं स्यादिनद्वयं पुण्यमथोदयास्तात् ॥

पूर्वपरस्तात् घटी याम्यसौम्यायने दिने पूर्वपरेस्तु पुण्ये ॥ [illegible] संध्यात्रि

नाडीप्रमितार्कबिंबादर्धो दितास्तादधऊर्ध्वमत्र ॥ स्वे याम्यसौम्ये त्रय

णेक्रमास्तपुण्येस्तदानींपरपूर्वघस्रे ॥ ६ ॥ याम्यायने विष्णुपदे चाद्याम

26

मु॰ चिं॰

१४

ध्याचैषसुला॥७॥ज॥१॥यो॥ षडशी

त्यानने शौम्ये परानाड्यो स्तु पुण्य

दा॥७॥ तयायनं शाखरशाहता

स्त्वस्य स्वार्कं गत्या विहतादिनाद्यैः

मेषादितः प्राकू चलसंक्रमास्य

र्दाणं ध्रैर्यदो वहुपुंण्यदास्ते॥च

समं मृदुक्षिपवसुश्रवो ग्निर्मघात्रिपूर्वा स्वप भं व दह्ये॥ध्रुवं द्विदे

वादितिभं जघन्यं स्वार्पवुपाद्वानिलशाक्रयाम्यं॥८॥जघन्यमे शंक

मणे मुहूर्त्ताः सरंद्रु॥१५॥वो॥१५॥बाणकृता॥४५॥वृहस्तू॥खरामसंख्या

ज पा

राम

॥१४॥

॥२०समभे महर्घंसमर्घं सा
म्यं विधुदर्शलौपि॥१०॥अर्का
दिवारसंक्रांतौ कर्कस्पाद्धवि
सौंपका॥ दिशो॥१०॥ नखा॥२०

गजा॥८॥ सूर्या१२ धृत्यो॥१८॥ष्टादश॥१८॥सायका॥५ ॥११॥स्या
तैं तिले नागच तुष्पदे रविः सुप्तो निविष्टः सुगरादि पंचके॥ किंतुघ्न
ऊर्द्ध्वसकुनौ शाकौलवे नेष्ट समभ्रेष्ट दुहार्घवर्षणो॥१२॥ सिंहव्याघ्र
वराहरासभगजा वाहद्विषद्घोटका [illegible]मो खरणा युद्धस्थ ववश्वाजो
तौ वाहाः वेशंक्रमे॥ वस्त्रं श्वेतसुपीतहारितकपांडुरक्तःश्व कालं

मु.चिं.

१५

सितं॥ चित्रं कंवलदिग्ध नांभमथशस्त्रंस्पात्‌तु सुंडीगदा॥१२॥ खड्गो

| स्तुती | वैठी | उत्त्री |
|---|---|---|
| नेष्ट | सम | श्रेष्ट |
| तैतिल | गर | किंस्तुघ्न |
| नाग | वनिज | सकुन |
| चतुष्पद | विष्टि | कौलव |
| | बव | |
| | बालव | |

| कर्ण | बव | बालव | कौलव | तैतिल | गर | वनिज | विष्टि | शकुन | चतुष्पद | नाग | किंस्तुघ्न |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वाहन | सिंह | व्याघ्र | वराह | रासभ | गज | माहिष | अश्व | स्वान | अजा | गउ | कुर्कुटं |
| वस्त्र | स्वेत | पीत | हारित | पांडु | रक्त | काल | असित | चित्र | कंवल | नग्न | मघवर्न |
| आयुध | सक्ति | गदा | षड्ग | दंड | धनुष | तोमर | कुंत: | पाश | अंकुस | अस्त्र | वाण |
| भक्ष्य | तंदुल | पायस | मिष्टान्न | पक्कान्न | दुग्ध | दधि | चित्रान्न | गुरु | महु | घृत | खांड |
| लेप्य | कस्तूरी | कुंकुम | चंदन | मृत्तिका | गोरोचन | जावक | श्वेतमद | हरिद्रा | अंजन | अगरु | कर्पूरः |
| जोनय | देव | भूत | सर्प | पक्षि | पशु | मृग | विप्र | क्षत्री | वैश्य | शूद्र | संकर |
| पुष्प | पुंन्नाग | जाती | वकुल | केतकी | विल्लमू | अर्क | दूर्वा | शतपत्रकमल | मल्लिका | पाडर | जपा |
| ऽवस्था | वाला | कुमारी | मुग्धा | तरुनी | प्रौढा | प्रगल्भा | वृद्धा | वंध्या | अवध्यी | सुतवती | योगिनी |
| मुखे | जाम्य | उत्तर | पश्चि | पश्चि | पूर्वे | दक्षि | उत्तर | दक्षि | उत्तर | पश्चि | पश्चि। |

दंडशरास्त्रतोम
रमथोकुंतश्चपाशैं
कुशो॥ऽस्त्रंबाणऽ
स्त्वथभक्ष्यमन्नपर

राम

॥१५॥

29

मान्नं भैक्ष्यान्नपकान्नकं॥ दुग्धं दध्यपि चित्रतान्नगुडयमध्वाज्यय:
शर्करा॥ थोलेपो मृगनाभि कुंकुममयो पाटीरमन्द्रोचनं॥ १४॥ या
व: श्वोतमदो निशांजनमथो कालागुरुश्चंद्रको। जौतिर्दैवतभू
तसर्पविहगायश्वे कुरंगो द्विजा॥ क्षत्री वैश्यकसूद्रसंकरभवा
पुष्पं च पुन्नागकं जाती बाकुलकेतकी निचतथा बिल्वकं दूर्वां
बुजं॥ १५॥ स्यान्मल्लिका पाटलिकाजपा च संक्रांति वस्त्राशनवाह
नादि॥ नाशा: श्वतहृत्सुपजीविनां च स्थितोपविष्ट: स्वपतां चना
शा॥ १६॥ संक्रांति धिष्ण्याधरधिस्मत स्त्रि॥ २॥ भेस्वभेनरुतांग

मु·चिं·
१६

मनंततोरसे ६ सुखंत्रिभे ३ पीडनमंगभेसुखंत्रि ३ नेर्थहानिरस
भे ६ धनागम ॥१७॥ नृपेक्षणः सर्वकृतिश्च संगरः सास्त्रे विवाहो
गमदीक्षणं रवेः ॥ बीजैर्थताराबलतश्शुभो विधुर्विधोर्बलेर्कोर्क
बलेकुजादयः ॥१८॥ स्पष्टार्कशंक्रांतिविहीनरुक्तो मासोधिमा
संक्षयमासकस्तु ॥ द्विशंक्रमासस्तत्रविभागयोस्तत्तिथेर्हिमासौ
प्रथमांत्यसंज्ञौ ॥१९॥ इति श्रीदैवज्ञानंतसुतदैवज्ञरामविर
चिते मुहूर्तचिंतामणौ शंक्रांतिप्रकरणं तृतीयः ॥३॥ स्वर्जीरभ्यो
त्यै ६ ॥१२॥ खयुगे ॥१०॥४॥ ग्निनंदे ३ ॥९॥ शिवाक्षयो ॥११॥५॥ नौ
म शनीतमश्च रशांकयो ६ ॥९॥ र्लभशरे ॥१७॥५॥ गुणात्यौ ३ ॥१२॥

ये ३

राम
१६

चंद्रेखराब्धौ १० ४ गुणनंदयोश्च ३ ९ १ लाभाष्टमे ११ ८ चाब्धिशरे ४ ५ रसांत्ये ६ १२ नगाद्वये ७ २ ज्ञोद्विशरे २ ५ ब्धिरामे ४ ३ रसांकयो ६ ९ र्नगविधौ ८ १ खना गे १० ८ लभव्यये ११ १२ देवगुरोशराब्धौ ५ ४ २ २ द्यं ते २ १२ नवाखे ९ १० द्विगुणे ७ ३ शिवाष्टौ ११ ८ शुक्रः कृ नागे १८ द्विनगे २ ७ ग्निस्वपे ३ १ वेदांबरे ४ १० पंच निधौ ५ ७ गजेष्टौ ८ नंदेशयोः ९ ११ र्मनिरसे १२ ६ शिवाग्नौ ११ ३ ३ क्रमाक्षुभो ऽ विद्धइतिग्रहः सात्पिनुस्

मु॰चिं॰ तस्मात्त्र न वेधमाहुः॥ दुष्टोपि खेटो विपरीतवेधाच्छुभो द्विकोणा

१७ य॥२॥य॥ गतः सितेज्यः॥४॥ स्वजन्मराशेरिद वेधमाहुः रन्ध्रे ग्रहाधि

ष्ठितराशितस्य॥ हिमाद्रिविंध्यांतर एव दोषो न सर्वदेशेष्विति का

स्यपोक्तिः॥५॥ जन्मर्क्षे निधना॥ नं ग्रहे जनिभतो घातक्षतिः

श्रीव्यथाश्चिंता सौख्य कलत्रदौस्थ्य मृतयः स्युर्मान नाशः सुखं॥

लाभो पाय इति क्रमात्त दशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगोदानं शांतिरथो

ग्रहस्तशुभदं नो वीक्ष्यमाहुः परे॥६॥ पापांतः पापयुक् द्यूने पापाश्च

द्रः शुभोपसन्न॥ शुभांशे चाधिमित्रांशे गुरुर्दृष्टो शुभोपसन्नः॥७

सितासितादौ सदुष्टे चंद्रे पक्षौ शुभावुभौ॥ व्यत्यसे चाशुभौ प्रो

राम १७

त्तौ संकटे भ्रुवलं त्विदं ॥ ८ ॥ वज्रं शुक्रे ब्जेषु मुक्ता प्रवालं भौमे

गो गोमेदमर्क सुनश्च नीलं ॥ केतौ वैदूर्ज्य यो गुरौ पुष्प कं चज्ञे

या चिः पाक्य मर्के मध्यमान्य ॥ ८ ॥ माणिक्यमुक्ताफलविद्रु

मा नि गारुत्मतं पुष्पक वज्रनीलं ॥ गोमेद वैदूर्यक मर्कतस्तु

रत्नान्यथो त्तस्य मुदे सुवर्णं ॥ ९ ॥ धार्जे लाजा वर्तकं राहुके

त्वो रौप्यं शुक्रे द्वो श्च मुक्ता गुरोस्तु ॥ लोहं मंदो स्यार भान्वोः प्र

वालं ताराजन्मर्क्षे त्रिरावर्तिन स्यात् ॥ १० ॥ आद्यांशो पिप

दि १ लिः त्याज्यः प्रत्परो चरमें शाके: ॥ वंघे त्याज्यात्तृतीयांशो शे

मु॰चिं॰
१८

षांत्र पिच शोभना ।१०। जन्माख्य १ संपत्कृद्दिपदः २ क्षेम ४ प्र
त्यरि ५ साधका ६ वध ७ मैत्रा च तिमैत्रा ९ सुताराना म
सद्दकू फला ।११। मत्स्योत्स्वर्णतिलान्विपत्स्वपि गुडं शाकं वि
जन्मस्वयो दद्यात्प्रत्यरितारिकासुलवणं सर्वे विपत्प्रत्यरिः
मृत्युश्चादिमपर्ययेनजभदो पर्य्याये द्वितीयेंशकानादि १
प्रांत्य ४ तृतीयका २ स्य षस्तुभाः सर्वेस्तृतीये स्मृता ।१२
घस्रखंगतनं भुक्तं घटीयुक्तं युगा ४ दृतं ।। शरा ५ ब्धिह्नल्लु
ब्धतोर्कशेषे ६ वस्थाक्रियादिधो ।१३। प्रवास १ नासो २
मरणं ३ जयश्च ४ हास्या ५ रति ६ क्रीडित ७ सुप्तभुक्ता

पम
।।१८

९ ज्वराख्य ॥१०॥ कंप ॥११॥ स्थिरता ॥१२॥ ग्रवस्थामे पाक्रमान्ना

मसदृक्क फलास्य ॥१४॥ लाजाकुष्ठवलाप्रियांगुघनसिद्धा

र्थैर्निशादारुभिः ॥ पुंस्त्वालोध्रयुतोर्जलैर्निगदितेस्नानं

ग्रहोत्थाधिहृत ॥ धेनु ॥१॥ कंम्ब ॥२॥ रुनौ ॥२॥ वृषभ्व ॥२॥ कन

कं ॥४॥ पीतांवरं ॥५॥ घोटा ॥६॥ कः श्वेतो गौरशिता ॥७॥ महा ॥८॥

सिरज ॥९॥ ताइत्येरवे दक्षिणा ॥१५॥ सूर्जा रशौम्यास्फुजि

तोऽक्ष ॥५॥ नागाः ॥ चासप्ता ॥७॥ द्वि ॥७॥ घस्रान्विधरग्नि ॥३॥

नाडी ॥ तमोयमेज्यास्त्रि ॥३॥ रसा ॥६॥ भ्वि ॥७॥ मासानगंतव्य

36

मु॰ चिं॰

१९

| ईशाण | पूर्व | अग्नि |
|---|---|---|
| बुधः पन्ना | शुक्रः हीरा | चंद्रः मुक्ताफलम् |
| उत्तर | मध्यगोल | दक्षिण |
| गुरुः पुष्परागः | रविः मनिक्य | भौमः प्रवालकं |
| वायव्य | पश्चिम | नैऋत्य |
| केतुः वैडूर्यम् | शनिः नीलमनि | राहु गोमेदकम् |

राशेफलदाः पुरस्तात् १६ दुष्टे योगे हेमचंद्रे च शंखं धान्यं तिष्ये ... तिथौ तंदुलाश्व ॥ वारे रत्नं नेच गां हेमनाड्यां दद्यात्सिं धूयं चैरा सुराजा ॥ १७ ॥ रास्यादिगो रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ मध्ये शदाशशिसुतश्चरमे ज्ञमंदौ ॥ अध्वा १ न्न २ बन्धि ३ न्न ॥ सम

१४ दुःखानि मासजनिभे १८ यसाणमति ४ वस्त्र ५ शौख्यं ॥ ६ ॥ ... रविवासरादौ ॥ २१ ॥ इतिश्री देववशानंदसुत देवज्ञ रा

नाय

राम

३७

म विरचितमुहूर्तचिंतामणौ गोचरप्रकरणं चतुर्थं ॥४॥ आद्यं रजः शुभं माघे मार्गे राधे सुफाल्गुणे। ज्येष्ठश्रा

वणयोः शुक्ले सद्वारे सतनौ दिवा ॥१॥ कृतित्रयमृदुक्षिप्र

ध्रुवस्वातौ सितांबरे ॥ मध्यं च मूलादितिन्नेपि :त मिश्रे

परे ष्वसत् ॥२॥ भद्रा निद्रा संक्रमे दर्शरिक्ता संध्याष

ष्ठी द्वादशी वैधृतेषु ॥ रोगे हृग्न्यां चंद्रसूर्योपरागे पाते चा

धं नो रजो दर्शनं सत् ॥३॥ अथ रितुस्नानं ॥ हस्तानिला

श्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शाक्रान्विते शुभतिथौ शुभवा

सरे च ॥ स्नायात्सिया तु युवती मृगपौष्ण वांयु हस्ताश्विधा

ट्टमिररंलभते च गर्भे ॥४॥ गंडांतं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे
च मूलांतकं दास्रं पौष्णमथोपराग दिवसान्पातं तथा वैधृतिं
पित्रोः श्राद्धदिने दिवा च परिघाद्यर्द्धं स्वपत्नीगतो भान्युत्पात
हतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभं ॥५॥ भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च
संध्या भौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्चतस्रः ॥६॥ अथ गर्भाधानं
गर्भाधानं त्र्युत्तरेंद्वर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वंबुपे सत् ॥६
केंद्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने ओ
जांशगेऽब्जेऽपि युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं तत् ॥७
जीवार्कारदिने मृगेज्यनक्षत्रे तिस्रोत्तरादितिवुघ्न्ये रिक्तामा

र्के १२ ॥ २ ॥ रश्मा ६ ॥ ८ ॥ वर्ज्यतिथिभिमासाधिपे पीवरे सीमं

तो ष्टमषष्ठमासा शुभदैः केंद्रः त्रिकोणे ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ ५ ॥ ९ ॥

रवलैर्लभारित्रिषु ॥ ११ ॥ ६ ॥ ३ ॥ वाध्रुवात्यसदहेलग्नेच पुंभां

सके ॥ ८ ॥ इतिसीमंत ॥ मासेस्वरासित ॥ १ कुजे ॥ २ ज्य ॥ ३ र

वी ४ दु ५ सौरि ॥ ६ ॥ श्चंद्रात्मजो ॥ ७ स्ततुपचंद्र ॥ ९ ॥ दिवाक

रास्सु ॥ १० ॥ स्त्रीणांविधोर्वलमुसंति विवाह गर्भसंस्कारयोरि

तरकर्मसु भर्तरेव ॥ ९ ॥ इतिशीमंत ॥ पूर्वोदितैः पुंसवनंविधे

येमासे तृतीयेत्वथविष्णुपूजा ॥ मासेष्टमेविष्णुविधातजीवैः

र्लग्नेशुभैर्मृत्युगृहेच सुधे ॥ १० ॥ इतिपुंसवनं ॥ तज्जाति

कर्माादिशिशोर्विधेयंपर्वाख्यरिक्तोनतिथौशुभेह्नि॥ एकादशे
द्वादशकेपिघस्रेमृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषुस्यात्॥११॥ इतिनामक
र्म॥ पौष्णाश्वर्केंदुकरवाततृयेषुसूतीस्नानंसमित्रभरवीज्य
कुजेषुसस्तं॥ नार्द्रात्रयेस्रुतिमघांतकमिश्रमूलत्वाष्ट्रारसौ
रिवसु८षट्‌द्वादशरवि॥१२॥रिक्तातिथ्यं॥१२॥ इतिप्रसूतीस्ना
न॥ मासेचैत्रप्रथमेभवेत्सदशनोवालोविनस्येत्स्वयंहन्यात्स
स्वनुजा२नुजाश्च॥३॥जननीज्येष्ठान्॥५॥द्वितीयादिषु॥
षष्ठादौलभते६हिभोगमतुलंतातात्सुखंसोनुजा॥पुष्टिःसांच

लक्ष्मीं ॥ ८ तिशौख्य ॥ १० दशनो वोर्धस्वपित्रादिहा ॥ १३ ॥ इति सि
द्धदशानः प्रवेशः ॥ दोला हौरौर्के भात्यं च ॥ ५ ॥ शर ॥ ५ ॥ पंचे ॥ ५ ॥ पु
सप्तमि ॥ ५ ॥ ७ ॥ नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधि सौख्यं क्रमाच्छिशो
१५ दंता ॥ २२ ॥ र्की ॥ १२ ॥ भूप ॥ १६ ॥ ध्वति ॥ १८ ॥ दिङ्गि ॥ १० ॥ तवासरे
पुवारे सुभे मलघु ध्रुव भे शिशूनां ॥ दोलादिरूढि रथ्यनिक्रम धि
णं चतुर्थमासे गतो क्तसमये र्कमितेह्रि वा स्यात् ॥ १६ ॥ इति दो
लाधिरूढमणे ॥ कवीज्यास्तचैत्राधिमासेन पौषजलं पूज
येन्स्तत्तिकामासपूर्तौ ॥ वुधेन्दीज्यवारे विरिक्तेतिथौ हिस्कतीज्या

मु॰चिं॰

२२

दितीर्द्दर्कनैऋत्यमैत्रैः ॥१६॥ इतिजलपूजा ॥ रिक्ता ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥

नंदा ॥ १ ॥ ६ ॥ ११ ॥ ८ ॥ १३ ॥ ३० ॥ शं हरिदिवस ॥ १२ ॥ मथोसौरि

भौमार्कवारं लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहं नवमंमीनमेखालि

कं च ॥ हित्वाषष्ठास्तमे मास्य चमृगदृशांपंचमा ॥ ५ ॥ दोजमा

सेर्नक्षत्रैस्याःस्थिराख्यैः समृदुलघुचरैर्वालिकान्नाशनंशस्तं

१७ ॥ केंद्राय ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ ११ ॥ कोण ॥ ९ ॥ ५ ॥ सहजेषुशुभैः

खशुद्धे ॥ लग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च वदंति पापे ॥ लग्नाष्टमषष्ठरहि

तं सससि न प्रशस्तं मैत्रां बुपानिलजनुर्भमसच्च केचित् ॥ १८ ॥

राम

२२

43

क्षीणेंदुपूर्णेचंद्रे ज्यस्तभौमार्कार्किनार्गवेः॥ त्रिकोणेः ९।५

व्यय १२ केंद्र ॥१॥४॥७॥१०॥ इ च स्थितैरुक्तंफलंग्रहैः॥१९॥

भिक्षाशिशियशक्षुद्दीर्घजीवीज्ञानीचपित्तरुक्॥ कुष्टीचान्न

लोशवातव्याधिमांन्भोगभागिति॥२०॥ इत्यन्नप्राशनं॥

पृथ्वीं वराहमभिपूज्य कुजे विमुक्ते रिक्तेतिथौ व्रजति पंचममा

सवालं॥ बध्वाशुभेन्हि कटिसूत्रमथ ध्रुवेंदुज्येष्टर्क्षमैत्रल

घुभैरुपवेशयेत्कौ॥२१॥ तस्मिन्काले स्थापयेत पुरस्याद्द

स्त्रं वस्त्रं पुस्तकं लेखनी च॥ स्वर्णं रौप्यं यच्च गृह्णाति बालस्तेर

मु॰चिं॰
२३

जीवैस्तस्य वृत्तिप्रतिष्ठा ॥ २२ ॥ इति भूम्युपवेशनं ॥ वारे मामा
कि हीने क्रूवमृदुलघुचरैर्विष्णुमूलादितीज्य ॥ स्वाती वस्वम्बु
पौष्णे मिथुनैर्मृगवधूकुंभ ११ गो २ मीन १२ लग्ने ॥ सौम्ये कें
द्रत्रिकोणे ९ । ५ रन्ध्रभगगनगनैः शत्रुधीलाभ ११ स्त्रि ३ श
स्थे ॥ स्तां वूलं शार्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा ॥
२३ ॥ इति तांबूलभक्षणं ॥ द्वित्वै तान । चैत्रपौषाव महरि
सयनं जन्ममासे च रिक्तां युग्माब्दं जन्मतारामृतुमुनिवसु
भिः सम्मिते मास्यथो वा ॥ जन्माद्वा सूर्यभूपैः परिमितिदिव

राम
॥ २३

सत्येंदुसुकेज्यवारे धौजाद्वे विश्वमूलादितिमृदुलघुभैः क
र्णवेधः प्रशस्तं ॥२४॥ इति कर्णवेधः ॥ गीर्वाणां वुपतिष्ठा
व्रतपरिनयनाधानगृहप्रवेशाः श्चौलं राज्याभिषेको व्रतम
पि च शुभं नैव याम्यायने स्यात् ॥ नो वा वाल्यास्तवार्द्धे सुरगु
रुशिनयोर्नैव केतूदयौ स्यात् पक्षं वार्धं च केचिज्ज इति तम
परे यावदीक्षां तु दग्ते ॥२६॥ पुरः पश्चात् भृगोर्वाल्यं त्रिदशा
हं च वार्धकं ॥ पक्षं पंचदिनं तद्वे गुरोपक्षमुदाहृतं ॥२७॥ तद
शाहं च त्रिहं विदुः ॥२८॥ अथ चौलं ॥ चूडावर्षे तृतीयात्प्रम

46

मु॰चिं॰
२४

वति विषमे ष्टार्के रिक्ताद्यषष्ठीः सर्वे नाद्ये विचैत्रोदगयनसमये
ज्ञेज्यशुक्रेंदुकानां ॥ वारे लग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौ नैध
ने शुद्धियुक्ते: शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुलघुचरभैरायषट्त्रिस्थ
पापैः ॥२९॥ क्षीणचंद्रकुजशौरिभास्करैः मृत्युशस्त्रमतिपंगु
ताज्वराः संभवंति बुधजीवभार्गवैः केंद्रगैश्च शुभमिष्टता
रया ॥३०॥ पंचमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् पंच
वर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ॥३१॥ इति चूडाकर्म ॥ ता
राद्दौष्ट्ये ऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा क्षौरं सत्स्यात्सौम्यमित्रस्य वर्गे शौ

राम
२४

म्पमेज्ञेसोमनेदृहस्तारारास्तात्तेयाक्षौरयात्रादिकृत्ये ॥२२॥ स्त्रस्तु

मत्यासूतिकायात्सूनोः क्षौलादिमाचरेत् ॥ ज्येष्ठापत्यस्यनोज्ये

ष्ठेकैश्चिमार्गोपिनेष्यते ॥२३॥ दंतः क्षौरनखक्रियादिविहि

तांचौलादितेवारन्ने ॥ पातंज्ञाररवीन् विहायनवमंघ्रस्त्रंच

संध्यास्तथा ॥ रिक्तापर्वनिशांनिराशनरनयामप्रयाणोद्यतस्ना

ताभ्यक्तकृताशनैर्नहिपुनः कार्यादितप्रसुभिः ॥२४॥ क्रतुपा

णिपीडमतिवंधमोक्षणे ॥ क्षुरकर्मचद्विजन्पाज्ञयाचरेत्

सववाहतीर्थगमसिंधुमज्जनक्षुरमाचरेन्नखलुगर्भिणीप

मु·चिं·

॥२५॥

तिः ॥२५॥ नृपाणां हितं क्षौरमेस्मस्तु कर्मदिने पंचमे पंचमस्यो

दये वा ॥ षडग्निस्त्रिमैत्रो एकः पंचपित्र्योद्धतो ध्वर्यमा क्षौरकृ

न्मृत्युमेति ॥२६॥ इति क्षौरकर्म ॥ गनेश विष्णुवाक्रामाप्र

पूज्य पंचमाब्दिके ॥ तिथौ शिवार्कदिक्द्विषट्शरत्रिके रवावु

दकू ॥२७॥ लघुश्रवोनिलांत्यभादितीशमित्रतक्षभे । चरो

न सत्तनौ शिसौ लिपिग्रहस्सतां दिने ॥२८॥ इति क्षरारंभ ॥

मृगात्कराच्छ्रुतित्रयोश्विमूलपूर्विकात्रये गुरुद्वये र्कजीववि

त्सिते ऽह्नि षट्सरत्रिके ॥२९॥ शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवांत्यमि

राम

२५

चमे परैः शुभै रधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेंद्रगैः स्मृता ॥ ४० ॥ इति विद्यारंभ ॥ विप्राणां व्रतबंधनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे ॥ वर्षे वाप्यथ पंचमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे ॥ ४१ ॥ वैश्यानां पुनरष्टमेप्यथ पुनः स्याद्द्वादशे वत्सरे कालेथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाहुर्बुधा ॥ ४२ ॥ क्षिप्र ध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा रौद्रेर्क विद्गुरुसितेंदुदिने व्रतं सत् ॥ द्वि २ त्रि ३ षु ५ रुद्र ११ रवि १२ दिक्प्रमितेतिथौ च कृष्णादिमत्रिलवकेपि न चापरान्हे ॥ ४३ ॥ कवीज्यचंद्रलग्नपा रिपौ मृत्यु व्रते धमाः ॥ व्ययेब्ज भार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः ॥ ४४ ॥ व्रतबंधेष्टषट्‌रिःफा १२ वर्जिताः शोभना शुभाः त्रिषडाये खलाः

मु॰ चिं॰

२६॥

धी १

कर्कगोस्थपूर्नेविधस्तनौ॥४५॥ विप्रांशौ भार्गवेज्यौकुजार्कौराज

न्यानांमोषधीशोविसांच॥ शूद्राणां सश्वांत्यजानांशनिस्यात्‌ छा

खेशास्फुर्ज्जीवसुक्रारशौम्यां॥४६॥ ऋग्यजुःशामाथर्वणः॥ शा

खेशवारतनुवीर्यमतीवशस्तं॥ शाखेशसूर्यशशिजीवबलेव्रतंस

त्‌॥ जीवेभृगौरिपुगृहे विजितेच नीचे॥ स्याद्वेदशास्त्रविधिनारहि

तोव्रतेणः॥४७॥ जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रतेविद्याधिकोव्रती॥ आ

द्यगर्भेपिविप्राणांक्षत्रादीनां मनादिमे॥४८॥ खेचखेस्वभेस्वमे

त्रेवास्वांशेवगोत्तमेगुरुः॥ रिष्फाष्टतूर्यगोपीष्टोनीचारिस्थ

राम

॥२६॥

मृत्योप्यसत् ॥ ४९ ॥ वट्कन्याजन्मराशेस्त्रिकोणगे ॥ ९ ॥ ५ ॥ य
११ ॥ द्वि २ सप्त ७ गः ॥ श्रेष्ठो गुरुः ख १० ॥ षट्‍ ... चे पूजया
न्यत्र ॥ ४ ॥ ८ ॥ १२ ॥ निंदितः ॥ ५० ॥ कल्मे प्रदोषेमध्याये शनौ
निस्य परान्हके ॥ प्राक् संध्यागर्जिते नेष्टो व्रतवंधो गलग्र
ह ॥ ५१ ॥ कूरोजडोन्नवेत्पापीषट्षड्कर्मकृत् वटु ॥ जज्ञार्थन्त्रा
कृतयामू ॥ खौरव्याद्यंशोतनौकमात् ॥ ५२ ॥ विद्यानिरतः
सुचराशिलवे ॥ पापांशगते हि दरिद्रतरः ॥ चंद्रेस्वलवे वद्रुः
दुःखयुतः कर्णद्विति भे धनवांस्वलवे ॥ ५३ ॥ राजसेवी वै
श्यपवृत्तिः शास्त्रवृत्तिश्च पाठकः ॥ प्राज्ञोर्थवान्म्लेक्षसेवी

52

केंद्रे सूर्यादिखेचरैः ॥५४॥ शुक्रे जीवेत या चंद्रे सूर्ये भौमार्कि
संयुते ॥ निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निर्धनसद्युते पटुः ॥५५॥ विधौ
शिनांशगे सिते त्रिकोणगे गुरौ तनौ ॥ समस्तवेद विद्व्रतीय
मांशगे ति निर्घृणः ॥५६॥ शुचिशुक्रपौषतपसां दिगश्वरुद्रा
र्क १० । २ । ११ । १२ संख्यसिततिथयः ॥ भूतादित्रितपाष्ट
मीसंक्रमणं च व्रतेष्वनाध्यायाः ॥५७॥ अर्क १२ तर्क ६ त्रि
३ तिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः रात्र्यर्धसार्द्धप्रहरैः याममध्य
स्थितैः क्रमात् ॥५८॥ प्राग्ब्रह्मौदनपाकाद्व्रतबंधानंतरं यदि
चेत् । उत्पातानध्यायतोत्पत्तावपि शांतिपूर्वकं स्यात् ॥५९॥

वेदक्रमाच्छिशिशि वाहिकरत्रिमूलपूर्वोत्तरपौष्णकरकेषु मघा

दितीज्ये॥ धौवे पु॥ चाश्विवसुपुष्यकरोत्तरे शाकरी मृगा

सलघुमित्रघनादितौ सतः॥ ६०॥ नांदीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे

लग्नांतरं न हि॥ शांत्याचौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्यो न्यथा त्व

सत्॥ ६१॥ इति व्रतबंधः॥ अथ छुरिकाबंधनसमावर्तने

केशांताः॥ विचैत्रव्रतमासादौ विभौ मास्ते विभूमिजे॥ छुरि

काबंधनं सत्स्यान्नृपाणां प्राग्विवाहतः॥ ६२॥ केशांत षोडशे व

र्षे चौलोक्तादिवसे शुभं॥ व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्तनमि

ष्यते॥ ६३॥ इति श्रीदैवज्ञानंदसुत दैवज्ञरामविरचिते मुहू

सीचिंतामणौ संस्कारप्रकरणं पंचमं ॥५॥ अथ व्यवाहादि
कम् ॥ भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता शीलं शुभं भवति
लग्नवशेन तस्याः ॥ तस्माद्विवाहसमयः परिचिंत्यते हि तंनिघ्नतामु
पगताः सुतशीलधर्माः ॥१॥ आदौ संपूज्य रत्नादिभिरथ गणकं
वेदयेत्स्वस्थचित्तं कंन्योद्वाहं दिगीशानलहयत्रिशिखे ॥१०॥११
२॥७॥५॥ प्रश्नलग्नाद्यदींदुः ॥२॥ दृष्टो जीवेन सद्यः परिणयन
करो गोतुलाकर्कटाख्यं वा स्यात्प्रश्नस्य लग्नं शुभखचरयुतालो
कितं तद्विदध्यात् ॥३॥ विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलि
नौ यदि पश्यतः। रचयतो वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतो यु

वतिप्रदो ॥ ३ ॥ षष्ठाष्टस्थः प्रश्नलग्नाद्यदींदुर्लग्ने क्रूरः सप्तमे वा
कुजस्यात् ॥ मूर्त्तौ चेंदुः सप्तमे तस्य भौमो रंडा स्यात् स्यादष्टसंवत्सरे
ण ॥ ४ ॥ प्रश्नतनोर्यदि पापनभोगः पंचमगो रिपुदृष्टशरीरः नी
चगतस्स तदा खलु कंन्या सा कुलटाथ च वा मृतवत्सा ॥ ५ ॥
यदि भवति सितातिरिक्तपक्षे तनुगृहतः समराशिगः शशांकः
अशुभखच्चरवीक्षितोरिरंध्रे भवति विवाहविनाशकारकोयं
६ ॥ प्रश्नलग्नात्क्षणे यादृशापत्ययुक्खेचरा याकामिनी तत्र चेदा
व्रजेत् ॥ कन्यका वा सुता वा तदा पंडितैस्तादृशः पत्यमस्या वि

मु·चिं· वायसो २ पं
२९

निर्द्दिश्यते ॥७॥ शंखभेरीविं [illegible] चीरवैर्मंगलं जायते वै परीत्यं य
दालक्षयेत् ॥ रौं शौं भौं वा खरः श्वा सृगालोपि वा प्रश्नलग्नक्ष
णे रौति नादं यदि ॥८॥ जन्मोत्संच विलोक्य बालविधवायो
गं विधाय व्रतं । सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमं वार
हः । सल्लग्नेच्युतमूर्त्ति पिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं । दद्या
त्तांच्चिरजीवि [illegible] नन्नवे दोषः पुनः भर्त्तुवः ॥९॥ विभवस्यातिवै
लव पूर्वी त्र्ययमैत्रैर्वन्ध्याग्नेयैर्वा करपीडोच्चितरिक्षैः ॥ वस्त्रा
लंकारादि समेतैः फलपुष्पैः संतोष्याद्दोस्या दत्तु कंन्या वरएं

राम
२९॥

57

दि ॥१०॥ धरणिदेवो यदा कन्यकासोदरः सुलग्ने दिने गीतवाद्या
दिभिः संस्कृतः । वरवनिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैर्बैद्धि
पूर्वात्रयैराचरेत् ॥११॥ गुरुशुद्धिवसेन कन्यकानां ॥ समवर्षे तु ष
डब्दकोपरिष्टात् । रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणामुभयोश्चंद्रवि
शुद्धितो विवाहः ॥१२॥ मिथुनकुंभमृगाऽलिवृषाजिगे मिथु
रवौ
नगेपि गुरौ त्रिबले मुच्चैः ॥ अलिमृगाजगते करपीडनं भवति
कार्तिकपौषमधुष्वपि ॥१३॥ आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्ज
न्ममासभतिथौ करग्रहः ॥ नोचितोऽथ सबुधैः प्रशस्यते चेद्दि

तीयजनुषोः सुतः प्रदः॥१४॥ ज्येष्ठद्वंद्वंमध्यमंसंप्रदिष्टंत्रिज्येष्ठं
चेन्नैवयुक्तंकदापि। केचित्सूर्यंवह्निगंप्रोह्यचान्द्रनैवान्यो
न्यंज्येष्ठयोस्याद्विवाहः॥१५॥ सुतपरिणयात्षण्मासांतःसुता
करपीडनंनचनिजकुलेतद्वद्वामंडनादपिमुंडनं॥ नचसह
जसुतोद्वाहोब्दार्धेसुमेनपितृक्रिया॥१६॥ वध्वावरस्यापि
कुलेत्रिपौरुषे। नाशंव्रजेत्कश्चननिश्चयोत्तरे॥ मासोत्तरंतत्र
विवाहइष्यते। शांत्याथवासूतकनिर्गमेपरैः॥१७॥ चूडाव्रतं
चापिविवाहतोव्रताच्चूडांचनेपुरुषत्रयांतरे। वधूप्रवेशाच्च
ष्टी

सुताविनिर्गमः॥षण्मासंतोवाब्दविभेदतःशुभ ॥१८॥श्वश्रू

विनाशमह्निजोसुततरांविधत्तः॥कंन्यासुतौनिरितिजौश्वसु

रंहतश्चज्येष्ठाभिजाततनयास्वधवाग्रजंचशक्राग्निजा

भवतिदेवरनाशकर्त्री॥१९॥द्वीशाद्यपादत्रयजाकंन्यादे

वरशोख्यदाः॥मूलांत्यपादसार्पाद्यपादयातेतयोःशुभो॥२०॥

वर्णोवश्यंतथातारायोनिश्चग्रहमैत्रकं॥गणमैत्रंभकूटंच

नाडीचैतेगुणाधिकाः॥२१॥द्विजाहपालिकर्करास्ततोन्त्र

पाविशोघ्रिजाः॥वरस्यवर्णतोधिकावधूर्नशस्यतेवुधैः

मु॰चि॰
२१

२२॥ हित्वा मृगेंद्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः॥
सर्वेपि सिंहस्य वशे विना लिंज्ञेयं नराणां व्यवहारतोन्यत्॥ २३
कन्यक्षीद्वस्न्नं यावत्कंन्यासंवरमादपि॥ गण्यै न्नवभिः शेषे
त्रिषद्भिरसत्स्मता॥ २४॥ इति वश्यप्रीति॥ अथ योनि॥

अश्वन्यंबुपयोर्द्दयोनिगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः सिंहो वस्व
जपाद्भयो समुदितौ याम्यांत्ययोकुंजरः॥ मेषो देवपुरोहितान
लन्नयोकर्णौ बुनोर्वानरः स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलः ५॥ २१॥
श्चान्द्राब्जयोन्यो रहिः॥ २५॥ ज्येष्ठामैत्रन्नयोकुरंग उदितो मू

राम
२१

लार्द्रयोश्वातयामार्जारो दितिसार्पयोरपि मघायोन्योस्तथै

वोंदुरः ॥ व्याघ्रो हीशभचित्रयोरपि च गोरार्यएमवुध्न्यर्क्षयोः यो

निः पादगयोः परस्परमहावैरं विवाहेस्मृतं ॥ २६ ॥ इतियोनि

प्रीतिः ॥ मित्राणिद्युमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौवैरिणौ

सौम्यश्चास्यसमो वुधो विधुरवीमित्रे न चास्य द्विषत् शेषाश्च

स्य समाकुजस्यसुहृदः श्चंद्रेज्यसूर्येवुधः ॥ शत्रुः शुक्रशनीस

मौच शशभृत्सूनोः सितार्हस्करौ ॥ २७ ॥ मित्रेचास्य रिपुः शशी

गुरुशनिक्ष्माजाः समागीष्पतेः मित्राण्यर्ककुजेंदवो वुधरि

तौ शत्रू समः सूर्यजः ॥ मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कु
जेज्यौ शमौ मित्रे भृगुज्ञ कवुधौ शनेरपि शशिक्ष्माजाद्विषोन्यः स
मः ॥ २८ ॥ रक्षोनरामरगणाः क्रमशो मघाहिवस्विंद्रमूलवरु
णानलतक्षराधाः ॥ पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्रादि
तींदुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ २९ ॥ निजनिजगणमध्ये प्रीति
रत्युत्तमा स्याद्‌मरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा ॥ असुरम
नुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकांततो



ऽत्र ॥ ३० ॥ मृत्युः षडष्टके ज्ञेयो ऽपत्यहानिर्नवात्मजे ॥ द्विद्वादशे

निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्रसौख्यकृत् ॥३१॥ प्रोक्ते दुष्टन्नकूटके
परिनयस्त्वेकाधिपत्वेशुभो योराशीश्वरशौहृद्येपिगदितो
नाडनक्षत्रशुद्धिर्यदि: अन्यर्क्षेशपयोर्वीलित्वसखित्वेनाडनक्षे
शुद्धौतथाताराशुद्धिवशेनराशिवसितानावेनिरुक्तोबुधैः
३२ मैत्र्यंराशिस्वामिनोरंशनाथद्वंद्वस्यापिस्याद्गणानांनदो
षः खेटारित्वंन्नाशये त्सद्भकूटंखेटप्रीतिश्चापिदुष्टंन्नकूटं
३३ ज्येष्ठार्यम्योशानीराधिपन्नयुगयुगंदास्त्रन्नंचैकनाडी
पुष्योदुत्वाष्टमैत्रांतकवसुजलन्नंयोणिबुध्न्येचमध्या ॥ वा

मु·चिं

२२॥

द्यूग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथोपेद्भमंचापरास्यात्तद्दंपत्योर्द्वेकनाड्यांपरिनयनमसन्मध्यनाड्यांहिमृत्युः॥३४॥इतिनाडीनां॥ अकचटतपयशवर्गाखगेशमार्ज्जारसिंहसुनकानां॥ सर्प्पाखुमृगावीनिजपंचमवैरिणामष्टौ॥३५॥इतिवर्गप्रीतिः॥ राश्यैक्यंचेद्भिन्नमृक्षंद्वयोस्यान्नक्षत्रैक्येराशियुग्मंतथैवा॥ नाडीदोषोनागणानांचदोषोनक्षत्रैक्येपादभेदेशुभंस्यात्॥३६॥ सेव्याधमर्णयुवतीनगरादिनंचेत्पूर्वेदिशत्यधनिभर्तृपुरादिषड्जात्॥ सोवाविनाशधननाशनमृत्युर्ति

राम

॥२२॥

नाशग्रामादिशौख्यहृदिदंक्रमशः प्रतिष्टं॥३७॥ कुजशुक्रशौ

म्यशाशिसूर्यचंद्रजाः कविभौमजीवशनिसौरयोगुरुः॥३८

राशिपाः क्रियमृगास्यतौलिकेंदुभयोनवांशविधिरुच्यतेबु

धैः॥३९॥ ह्यामयग्रहमध्येराशिरविहोराविषमन्त्रमध्येरविशशि

नोसाः॥३८ शुक्रसजीवशनिभूतनयष्ठवाणेशैलाष्टपंच

विशिखाशमराशिमध्ये॥ त्रिंशांशकोविषमभेविपरीतमस्य

द्रेष्काणकाः प्रथमपंचनवाधिपानां॥४०॥ स्याद्वादशांशइहरा

शितएवगेहहोरादिकाननवममांशकसूर्यभागाः॥ त्रिंशांश

कस्तु षडिमे कथिता स्तुवर्गाः सौम्यैः शुभं भवति चाशुभमेव पा
पैः ॥ ४१ ॥ ज्येष्ठापौष्णभसार्प्पभांत घटिकायुग्मं च मूलाश्विनी
पित्र्यादौ घटिकाद्वयं निगदितं तद्भस्य गंडांतकं ॥ ४२ ॥ कर्का
ल्यंडजभांततोर्द्धघटिकां सिंहाश्वमेषादिगं ॥ पूर्णांत्तत्र घ
टिकाद्वयं त्वशुभदं नंदादिति ष्वेष्वा दिमम् ॥ ४३ ॥ लग्नात्त्य
पात्र्जन्मर्क्षमायार्षस्योयदा तदा ॥ कर्त्तरी नाम शास्त्रेया मृत्युदा
रिद्रशोकदा ॥ ४४ ॥ चंद्रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं शुभं ॥
सौख्यं सापत्न्यवैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ॥ ४५ ॥ जन्मलग्नन्त्र

वेमत्युराशौने ष्टः करग्रहः ॥ एकाधिपत्यराशीशमेवानैवदो

षकृत् ४६ ॥ मीनोक्षककीलिमृगंस्त्रियो ष्टमंलग्नंयदाना

ष्टमगेहृदोषकृत् ॥ अन्योन्यमित्रत्ववसेनशाव धूर्त्ते वेत्सु

तायुग्रहसौख्यन्त्वानि ॥ ४७ ॥ मृतिभवनांशेयदिचविलग्ने

तदधिपतिर्वाऽशुभकरः स्यात् ॥ व्ययभवनंवाभवति तदं

शातदधिपतिर्वाकलहकरः स्यात् ॥ ४८ ॥ खरामत्योत्पादि

तिवक्रिपिच्यभेखवेदतः केदरतश्चसार्पभे ॥ खवाणतोश्वे

घ्पतितोयमांबुपेकृत्तेभंगत्वाब्धभविम्बजीवभे ॥ ४९ ॥ मैनो ततो

मु. चिं.

२५

द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभे कुपक्षैः २१ ततः शैवकरेऽष्टितो १६ ऽजभे

युगाश्विनवध्नमतोऽययाम्यभे २४ खचंद्रतो मित्रभवासवश्रु

तौ ५० मूलेंगवाणाद्विषनाडिका कृता ॥४१॥ वर्ज्याश्रुत्नेथो

विषनाडिका ध्रुवाः ॥ निघ्नाभभोगेन खतर्कलब्धा भुक्ताः स्फु

टाः स्युरेव विषनाडिकास्तथा ॥ ५१ ॥ गिरिशभुजगमित्राः

पित्र्यवस्वंबुविश्वेभिजिद्यच विधाता पींद्रइंद्रानलौ च ॥

निर्ऋतिरुदकनाथोऽप्यर्यमायोभगः स्युः क्रमश इह मुहूर्त्ता

वासरे वाणचंद्राः ॥ ५२ ॥ शिवोजपादादृष्टौ स्युर्भे शाक्रादि

राम

२५

तजीवकौ॥ विश्वर्क्षत्वष्ट्रमरुतोमुहूर्त्तानिशिकीर्त्तिता
५३॥ रवावर्यमाद्वस्त्ररक्षश्चसोमेकुजेवह्निपित्र्यंबुधे
चाभिजित्स्यात्॥ गुरौतोयरक्षोभगोब्राह्मपित्र्येशानौ
वीशशपौमुहूर्त्तानिषिद्धा॥ ५४॥ निर्वेद्यैशशिकरस्म
लमैत्रपित्र्यब्रह्मांत्योत्तरपवनेसुभोविवाहः॥ रिक्तामा
रहिततिथौसुभेक्षिवैस्यात्पांद्रिसुतिथिभागतोभि
जित्स्यात्॥ ५५॥ वैधोन्योन्यसमौविरंच्यभिजितोया
म्यानुराधर्क्षयोर्विश्वेन्द्वोर्हरिपित्र्ययोग्रहकृतोहस्तो

मु·चिं·
३६

त्तराभाद्रयोः॥ स्वातीवारुणयोर्भवेन्निरितिभादित्ये
त्तषोफाल्गयोः खेरेतत्र गतेतुरीयचरणाघोवर्त्तती
यदयोः॥ ५६॥ शाक्रेज्येशानभानिलेजलशिवेपौष्ण
यमर्क्षेवसूद्वीशेवैश्वश्रुधोश्रुभेद्वयंभगेसार्पानुरा
धेमित्रयः॥ हस्तोर्यातिमभेविधातृविधिभेमूलादि
तिलब्धभाजांघ्रिंयमप्यमध्येकृशानुहरिभेविधेकु॥ ७
द्रोरिवके॥ ५७॥ ऋक्षाणिक्रूरविधानिक्रूरमुक्तानिया

राम
३६

नि च ॥ उत्क्वा चंद्रेण मुक्तानि भ्भ मार्दानि प्रचक्षते ॥ ५८ ॥
स राहु पूर्णेंदु सिताः स्व प्रष्टे भंश प्रक्को जातिशरैर्मितंतं लि
७ ॥ ९ ॥ २२ ॥ ५ ॥ शं लत्त यंत्ते कैशानी ज्य भौ माः ॥ सूर्या
द्द त्तर्क्ताग्नि मितं पुरस्तात् ॥ ५९ ॥ १२ ॥ ८ ॥ ६ ॥ ३ ॥ द
र्षणा वैध्य तिसाध्य व्यती पातक गंड मूलयोगानां ॥ अंते
यन्न क्षत्रं पातेन निपातितं तत् स्यात् ॥ ६० ॥ पंचास्याजौ
मृगौ तौलिकुंभौ कन्या मीनौ कर्कनी चापयुग्मे ॥ तत्रा
न्यो न्यं चंद्र भान्वो न्निरुक्तं क्रांतेशाम्यं नोष्ठ भं मंगले त

मू॰चिं॰
३१

त्र॥ ६१॥ व्याघातगंडव्यतीपातपूर्वसूलांत्यवज्रेपरिघातगं
डे॥ एकार्गलाख्यो ह्यभिजित्समेतो दोषः शशीच्चेविषमर्क्ष
गोर्कात्॥ ६२॥ राराद्व दिकुशाक्रनगातिधृत्यतिथ्यि धृतिश्च
प्रहृते प्रकृते श्च पंच॥ ५॥ ८॥ १०॥ १४॥ ७॥ १९॥ १५॥ १८॥
२१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ उपग्रहाः सूर्यभतोज्चताराः
सुभानदेशे कुरुवाल्हिकानां॥ ६३॥ पातोपग्रहलत्तासु
नेष्टांघ्रिखेटयत्समः वारस्त्रिघ्नो ष्टभिस्तष्टोशेकस्माद्धी
यामकाः॥ ६४॥ शक्रार्कादिग्वसुरसाद्व्यग्निनः कुलिका

राम

॥ ३० ॥



73

रवेः ॥ राज्ञौनिरेकास्तिष्यं शाः शनौचांत्योपनिंदिताः ।
६५ ॥ चापांत्यगेगोघटगेपतंगेकर्काजगेस्त्रीमिथुनस्थि
तेच ॥ धिंघालिगेनक्रघटेसमास्तुस्तिथ्यो द्वितीया
प्रमुखाश्चदग्धा ॥ ६६ ॥ लग्नाच्चंद्रान्मंदनभवनगेखे
टेनस्यादिहपरिनयनं ॥ किंवाबाणासुगः ॥ ५५ मित्त
लवगेयामित्रीस्यादशुभकरमिदं ॥ ६७ ॥ वशिष्टः ॥ ए
कार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्त्तर्युदयास्तदोषाः

मू.चिं. नश्यंति चंद्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथाकाश्मसुदर्ग्यान्कौ

२८ रोति ९८ उपग्रहर्क्षे कुरुवाल्हिकेषु कलिंगवंगेषु

चपानितंभं सौराव्दसाल्वेषु चलत्ति तं भं त्यजेत्तु वि

द्धं किल सर्वदेशे ९९ शशांकसूर्यर्क्षयुते भमिश्रो घेरव

० भू १ युगां ४ गानि ६ दशो ११ शा १२ तिथ्या

१५ नागेंदवो १८ केंदु १९ मिन्ना नखा २० स्युत्तवंति

चैतेद्दशायोगसंज्ञाः ७० वाताभ्राग्निमहीपचोरमर

णं रुग्वज्रवादा क्षतिः योगांके दलिते समे मनुयुते यो

राम

२८

जेनुसैकाधिते। भदासाद यसंमितास्तु मनुमिरेखा

क्रमात्संलिखेद्दे धो स्मिन्र रविचंद्रयोर्नक्षु भदः स्पादे

करेखास्थयो ७१ लग्नेनाढ्यायाततिथ्यांक ५ नष्ट

शेष नागद्वाब्धितर्केंदुसंख्ये ८ ॥ २ ॥ ४ ६ ॥ १ रोगो

वह्निराजन्चौरो च मृत्युर्वाणख्यापंदाक्षिणात्ये प्रसिद्धौ ७२

रसागुणशशिनागाध्व्याढ्यः ६ ॥ ३ ॥ १ ॥ ८ ॥ ४ संक्रां

तियातांशकमितिरय द्रष्टांके ५ यदापंचसेषा ॥ रुगन

लन्रपचौरामृत्युसंज्ञाश्च वाणो न वहत शेषे शेषके कोस

मु॰चिं॰ शल्यः ॥ ७३ ॥ रात्रौचोररुजौदिवानरपतिर्वह्निःसदासंध्ययोः

३५ मृत्युश्चाथशनौ नृपोविदिमृतिर्भौमेन चौरोरवौ ॥ रोगोथव्र

तगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे वर्ज्याश्चक्रमशोबुधै

रुगल्ललक्ष्मापालचोरामृतिः ॥ ७४ ॥ आशांत्रिकोणंचतुरस्र

मस्तंपश्यंतिखेटाश्चरणाभिवृद्ध्या ॥ मंदोगुरुर्भूमिसुतःप

रेचक्रमेणसंपूर्णदृशश्चवेद्याः ॥ ७५ ॥ यदालग्नांशेशोलव राम

मथातनुपश्यतियुक्तोभवेद्वायं वोढुःशुभफलमनल्पंरचच ॥ ३५ ॥

यति लवघुनस्वामील्लवमदनभंलग्नभवनंप्रपश्येद्वा

वधमाशुभमितरथास्तेयमशुभं॥७६॥ लवेशो लवं लग्नपो

लग्नगेहं प्रपश्येन्मिथो वा शुभं स्याद्दरस्य॥ लवद्यूनपो शाद्यु

नद्यूनपोस्तं मिथो वेक्षते स्याच्छुभं कन्यकायाः॥७७॥ लवपति

शुभमित्रं वीक्षते संतनुं वा परिनयनकरस्य स्याच्छुभं शास्त्रदृ

ष्टं मदनलवपमित्रं सौम्यमंशाद्युनं वा तनुमदनगृहं चे

द्वीक्षते शर्म वंध्या॥७८॥ विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान्

दिवसांस्त्यजेदितरसंक्रमेषु च॥ घटिकास्तु षोडश शुभक्रि

याविधौ परतोपि पूर्वमपि संत्यजेद्बुधः॥७९॥ देवद्यकर्तवो

शाष्टौरवाश्विंऽ कारवन्न पाक्रमात्॥ वर्ज्या शंक्रमणे कीः देप्रा
योकेस्याऽनिनिदिताः॥ ८० घस्रे तुलालिवधिरोमृगाश्वौरा
श्रौचसिंहालिवघादिवांधाः॥ कंन्यानृयुक्कर्कटकानिशायां
दिनेघटोंत्येनिशिपंगुसंज्ञे॥ ८१ वधिराधन्विनुलालयोप
रान्हेमिथुनकर्कटकोंगनानिशांधाः॥ दिवसांधाहरिगोक्रि
यासुकुब्जामृगकुंन्यातिमभानिसंध्ययोर्हि॥ ८२॥ दारिद्र्यंव
धिरतनौदिवांधलग्नेवैधव्यंशिशुमरनंनिशांधलग्ने।
कुब्जेगेनिखिलधनिनाशमायुः सर्वज्ञाधिपगुरुदृष्टिभि

र्न दोषः॥ ८३॥ कार्मुकतौलिककंन्यायुग्मलवे हसगेवा॥
यस्मिन्न वेदुपयाम हिंस्ते सती खलु कन्या॥ ८४॥ अंसमनवां
शेनच परिनेयाः काचिन वर्गोत्तमयदहिला॥ नो चरलग्न
चरलवयोगे तौलिमृगस्थे राशिभ्र तिकुर्जातर॥ ८५॥ व्य
येशनिः खेवणिजे तती येभृगुस्तनो चंद्रखलानशस्ता॥
लग्नेट्कविग्लौस्वरिपो मृतौ ग्लौलग्नेट्सभाराश्चमदे
च ७ सर्वे ॥ ८६॥ त्र्या ३ या ११॥ १॥ ८॥ षट्॥ दी रविकेतु
तमोर्कपुत्रास्त्या यारिगक्षितिसुतो द्विगुणाय गो ज्ञ॥ सप्त

(80)

मु.चिं.
४१

व्ययाष्टरहितौ स्तगुरुसितौ च विघून ॥ ३ ॥ ७ ॥ षट् ॥ ६ ॥ व्यय ॥ १२ ॥
ग्रहान् परिहृत्य सस्तः ॥ ८७ ॥ पापो कर्त्तरि कारिकौ रिपुग्रहेस्नी
चेस्तगो कर्त्तरी दोषा नैव सितेतरि नीचग्रहगे ष ष्टाष्टदोषा
पिना ॥ भौमेस्ते रिपुनीचभे न हि भौ वेज्ञो मोष्टमो दोषकृ
न्नीचे नीचनवांशके शशिनि रीफाष्टारि दोषोपिना ॥ ८८
अब्दायनर्तुतिथिमासजयक्षदग्धतिथ्यंधकाननवधिरांध राम
मुषश्च दोषाः नश्यंति विद्गुरुसिते त्रिहकेंद्रकोणे तद्वच्च पा ॥ ४१ ॥
पविधयुक्तनवांशदोषः ॥ ८९ ॥ केंद्रे कोणे जीवे ज्ञा ए रवौ



८१

गलग्नेचंद्रेवापिवर्गोत्तमेवा॥ शर्वेदोषानाशमायांतिचं
द्रेलाभेतद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः॥ ५०॥ त्रिकोणे ३ । ५ के
न्द्रेवामदनरहितेदोषशतकंदरेसौम्यंस्थकोद्विगुणमपि
लक्षसुरगुरुःहनेदाये॥ ५१॥ केंद्रेतनुतनुलवेसौय
दितदासमूढंदोषारांदहनइवतूलंशमयति॥ ५२॥
द्वे देत्तभृगवोःपंचेंद्वोरवौसार्द्धत्रयो॥ ३॥ ३१॥ गुरौ॥ राम
३ मंदागुकेत्वारेशार्द्धकर्के कं॥ १॥ २१॥ विशोपका॥ ५२॥
स्वस्त्रसितोऽर्कस्थसुरत्तनुस्तनुर्जामित्रपश्याद्वयितोमम

82

मु·चिं
४२

शशी । एतद्बलं संप्रति भाव्यतां निकं ते खां सुखं संप्र वदे द्विवा

दितः ५२ कन्ये पक्षे सोर कुजार्के पि च वारे वर्जे नक्षत्रे यदि

वास्यात्कर पीडां । संकीर्णनां तर्हि सुतायु र्द्धन लाभ प्री

तिः प्राप्नोसा न्नवती ह स्थितिरेषा ॥५४॥

पंचेषु ५ ५ नव ९ नंदा ९ क्ष ५ सप्ता ७

द्वि ७ नव ९ सायका ५ नवेषु ५ द्वि ७ अजादितैलं

न्यत्रपतिघातिका ५५ मेषादिराशियवधूः वरयोः वृंदो

राम
४२

श्रुतैलादिलापनविधौ कथितात्र संख्या॥ सरभवानय

नवा ९ नगा ७ क्ष ५ नगा ७ द्रि ७ वाणा ५ वाणा

५ क्ष ५ वाणा ५ गिरयो ७ मुनिभिस्तु कैश्चित् ९९॥

गंधर्वादिविवाहे कृत वेद ४ नेत्र २ गुणो ३ देव १

कु १ पूगांगाग्निभूरामास्त्रिपद्यामष्टभाष्टभा ॥ ९७ ॥ वि

धौ वलिमनीक्ष्यवादलनगरहांगनविभूषणान्यथ च वे

दिकामंडपान ॥ विवाहविहतोडुभिर्विरचनेतयोर्द्वादश



84

मु॰ चिं॰

४३

तोन पूर्वमिदमाचरेत्त्रि ३ नव ९ ष ६ ॥ मिते वासरे ९ च

हस्तो ह्यायावेद हस्ते सम तात्तुल्या वेदी स ह्यतो वाम भागे युग्मे

ष स्त्रे ष द्हीने च पंच स प्ता हे स्यान्मंड पोद्वासनं च ॥ ४४ ॥ स

र बाण नवानंदा पंचाद्वि सप्तमं क भिः ५ ५ ९ ९ ॥ ५

७ ७ ९ अक्षानंदद्वि शरासैलामे खा घा तैल संख्यया

१०० सूर्ये गणा ६ सिंह ५ घटे ७ वृशे वस्तं भोलि च को

दंड ९ मृगेषु १ वायो मीना ॥ १२ ॥ ज १ कुंभे ११ ॥ नि

रतो विवाहे स्या प्पोग्नि को णे वृष युग्म २ ३ ४ कर्के

राम

४३

१०१ नास्याम्रृक्षंनतिथिकरणंनैवलग्नस्यचिंता॥ नोवा
वारोनचवलविधिनोयोमुहूर्त्तस्यचर्चा॥ नोवायोगोन
मृतिभवनंनैवजामित्रदोषे॥ गोधूलिःसामुनिभिरुदि
तासर्वकार्येषुसस्ता॥ १०२ पिंडीभूतेदिनकृतिहेमंतत्तौ
स्या दर्धास्तेतपसमयेगोधूलिस्यात्॥ संपूर्णास्तेजलधर
मालाकाले॥ त्रिधायोज्यासकलसुभेकार्यदौ॥ १०३॥ अ
स्तंजातेगुरुदिवसेसौरेसार्के लग्नान्मसौ॥ चारिपु॥ दीन्न
वनेलग्नेचेंदौ॥ कंन्यानाशास्त॥ १ नुमद ७ मृत्युस्ये॥ ८

भौमे वोदुर्लभे ॥११॥ धन २ सहजे ३ चंद्रे शौख्यं ॥१४॥
मेषादिगेऽर्केष्टशरा ५ ८ नगा ७ ॥क्षा ५॥ सप्तेशवा ॥५७॥
सप्तसरा ॥५७ गजाक्षा ५८ गोक्षा ५९ खतर्का ६० कु
रसा ६१ कुतर्का ६२ कंगानि ६३॥ षष्टी ६ र्नवपंच ५९
मुक्ति ॥१५॥ संक्रांतियातघस्रा द्यै र्गतनिघ्नीखषट् ६०
हृता लब्धेनांशादिना योज्यं यातर्क्षस्पष्टभास्करः ॥१६॥
तनोरिष्टांशकात्पूर्वैनवांशा दशसंगुणाः ॥ रामाप्तलब्ध
मंशादि तनोर्वर्गादिसाधने ॥१७॥ अर्काल्लग्नात्साय

नाड्यो ग्ययुक्तैः भागैर्निघ्नास्पोदयस्खाग्नि ॥ १०॥ भुक्तात्

भोग्यं भुक्तं चांतरोलोदयाढ्यं षघा ॥ ६०॥ भक्तं स्वेष्टनाड्यो

भवेयु ॥ १०५॥ चेल्लग्नार्कौ सायनावेकराशौ तद्विश्लेषघ्नो

दयास्खाग्निभक्तं खेष्टः कालो लग्नमूनं यदार्कादूनेः शे

षोर्कात्सषड्भान्निशायां ॥ १०६॥ उत्पातान्सह पात दग्धति

थिभिर्दुष्टांश्च योगास्तथा चंद्रेज्योशनसत्वथास्तमयनं ति

थ्याक्षयवृद्धितथा ॥ गंडांतं च विसिष्टशंक्रमदिनं तन्वंशपा

तं तथा तन्वंशेषविधूतथाष्टरिपुगान्पापस्यवर्गांस्तथा

मु॰चिं॰
४५

११०॥ सेंदुःक्रूरखगोदयाशमुदयास्तासुद्धिचंद्राप्सुधान्खार्ज्जूरं दशयोगयोगसहितंयामित्रलत्ताव्यधं॥ वाणोपग्रहपापकर्त्तरितयातिथ्यार्क्षवारोथ्थितंदुष्टंयोगमथार्धयामकुलिकाद्यान्वारदोषानपि॥१११॥ क्रूराक्रांतिविमु[illegible]क्तभंग्रहणभंक्रूरस्यगंतव्यभं त्रेधोत्पातहतंचकेतुहतभंसंध्योदितंभंतथा॥ तद्वच्चग्रहभिन्नयुद्धगतभंसर्वानिमान्संत्यजेद्दुष्टादेशुभकर्मसुग्रहकृतान्लग्नस्यदोषानपि॥११२॥ अ

शमादि ७ पंचां ५ क ८ दिनेविवाहा

रामं
४५॥

स्तनौः॥ यदिमस्तकोदयगृहंतदाजयः॥३॥ यदिप्रछत्तनौ

वसुधारुचिरा शुभवस्तुयुतिश्रुतिदर्शनिगं॥ यदिप्रछि

तिचादरतो ह्यशुभं॥ग्रहदृष्टयुतंचविलग्नमपिः४ वि

धुकुजजुतलग्नेसौरिदृष्टेयचंद्रे॥ मृतिभ॥८मदन

७संस्थेलग्नगेभास्करेपि॥ हिबुक॥४॥निधनो॥८दो

रा॥१ द्यूनगे॥७॥चापि पापेसपदिभवतिभंगपक्ष्मक

र्तुस्तदानीं॥५ त्रिकोणेकुजात्सौरिशुक्रात्सजीवाय दैको

पिवानोगमोकीछिशीवा॥ वलीयास्तुमध्येतयोर्योग्रह

मु·चिं·

४८

स्यात्सु कीयां दिशं प्रस्तुतासौ नयेच्च ॥ ६ ॥ प्रश्ने गम्यादि गी
शात्खेटः पंचम गोयः । वोभूयां इलयुक्तः स्वामाशां नयेत
शो ॥ ७ ॥ धनुर्मेष सिंहेषु यात्रा प्रशस्ता शनिज्ञोशनो राशि
मध्ये च मध्या रवौ कर्कमीनालि संस्थेति दीर्घा जन्म ॥
पंचसप्त ७ नितारा च नेष्टा ॥ ८ ॥ न षष्ठी न च द्वादशी ना
ष्टमी नो षितात्याद्यादिभः पूर्णिमामा न रिक्ता ॥ हयादित्य मित्रे
दुजीवं त्यहस्तश्रवो वासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥ ९ ॥ न पू
र्वदिशि शक्रभे न विधुसौरि वारे तथा ॥ न चाजपदभे

राम

॥४८॥

द्वधूप्रवेशोष्टिदिनांतराले ॥ शुभः परस्ताद्विषमाद्यमास

दिनेक्ष ॥ ५ वर्षात्परतोयथेष्टं ॥ ११३ ॥ ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्र

वसुमूलमघानिलैः वधूप्रवेशः सन्निष्टोरिक्तारार्के वुधे

परैः ॥ ११४ रवेरोगः कुजेमृत्यु बै धव्यंच वुधेस्मृतं ॥ जी

वशुक्रार्कि चंद्रेषु प्रवेशे प्रथमे वधू ॥ ११५ ॥ ज्येष्टेपतिज्ये

ष्टमथाधिकेपतिं हंत्यादिमे भर्तृगृहे वधूशुचौ ॥ श्वश्रू स

हस्येश्वसुरं क्षयेतनुं तातंमधौ तातगृहे विवाहतः ॥ ११६

अथ द्विरागमं ॥ चरोदयोजहायने घटालिमेषगेरवौ

मु॰चिं॰
४६

रवौज्यशुक्रयोगतः शुभग्रहस्य वासरे ॥ नृयुग्ममीनकं
न्यकातुलावृषे विलग्नके दुरागमं लघुध्रुवे चरेऽश्वपे मृदू
डुनि ॥ ११७ दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदिस्यात् गच्छेयुर्न
हि शिशुगर्भिणी नवोढाः बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नवो
ढा चेद्वंध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा ॥ ११८ नगरप्रवेशविष
यायुत्पद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः नृपपीड
नेन ववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्न हि ॥ ११९
पित्र्यगेहे चेत्कुचपुष्पसंभवं स्त्रीदानदोषः प्रतिशुक्रसं

राम
॥४६॥

भवं॥ भज्वंगिरोवत्सवशिष्ठकस्यपाः ५ त्रीणांभरद्वाज

मुणेकुलेतथा ॥ १२ ॥ इतिश्रीदेवरानंदसुतदैव

[illegible] विरचितेमुहूर्त्तचिंतामणौविवाहप्रक

रणं [illegible] ॥ ६ ॥ स्यादग्निहोत्रविधुरुत्तरगेदिनेश

मिश्रध्रुवांत्यशशिशुक्रसुरेज्यधिष्ण्ये ॥ रिक्तासुनोकुजश

शीज्यभगोननीचेनास्तंगतेनविजितेनचशत्रुगेहे ॥ १

नोकर्कमर्केहलसकुंभनवांशलग्नेनोजैतनौरविशशीज्य

कुजेत्रिकोणे ॥ १ ॥ ९ ॥ ५ केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ क्षेपष्टा ६

गते २ । ६ । ११ शुभेग्रहे केंद्रत्रिकोणायधनत्रि ॥ १।४
७।१०।९।५।११।२।३। संस्थितैः ॥ २ पापैस्तनौ
१ रुकू निधने ८ मृतिः सुते ५ पुत्रार्त्तिरंत्यार्थगतौ १२
२ दरिद्रताः स्यात्खेलसाभ्रष्टपदो घुनां ७ ॥ ४ ॥
गैः सर्वशुभं केंद्रगते शुभग्रहे ३ गुरोर्लग्नकोणे ११
५ कुजोरी ६ सितः खे १० स राजा सदामोदते राज्य
लक्ष्मी ॥ तृतीया ३ य ११ गौ सौरिसूर्यौ खबंधौ १०
४ गुरुश्चेद्दरिद्रो स्थिरा स्यान्नृपस्य ॥ ४ ॥ इति श्रीमु

इति चिंतामणौ राज्याभिषेकाष्टमं प्रकरणं ॥ ८ ॥ अ
थ यात्रायां ॥ यात्रायांप्रविदितजन्मनांनृपानां ॥ दात
व्यं दिवसमबुद्धजन्मनांच ॥ प्रश्नाद्येरुदयःनिमित्तमूल
भूतैर्विज्ञातैरशुभशुभेबुधः प्रदद्यात् ॥ १ ॥ जननराशि
तनूयदिलग्नगे ॥ तदधिपौयदिवा तत एववा ॥ त्रिरिपु
खाय ॥ ३ ॥ ६ ॥ १० ॥ ११ ॥ ग्रहंयदिचोदये विजयएवभवे
दवसुधापते ॥ २ ॥ रिपुजन्मलग्नभमथाधिपौतयोः ॥ त
स्तएवचोपयसयन्चेद्भवेत् ॥ दितकेषुनो यशुभवर्गक

गुरौयमदिशासुशुक्रार्कयोः॥ नयाशिदिसिधात्रभेःकु

जबुधेर्यमर्क्षेतथा॥ नसौम्यककुभिव्रजेत्स्वजयजीवित्ता

र्थीबुधाः॥१०॥ पूर्वान्हेध्रुवमिश्रभैर्नरपतिर्यात्रानमध्या

न्हके तीक्ष्णाख्येरपरान्हकेर्नलघुभैर्नोपूर्वरात्रेतथा

मैत्राख्येर्नचमध्यरात्रिसमयेच्चोग्रेस्तथानोचरे॥ रात्र्यंते

हरिहस्तपुष्यशशिभिःस्यात्सर्वकालेशुभा॥११॥ पूर्वाग्नि

पित्र्यंतकतारकानांभूपे॥१६॥ कविंशे॥२१॥ शा॥२१॥ तुरंग

मा ७ सु॥ स्वातीविशाखेंद्र भुजंगमानांनाड्योनिसि

97

मु·चि
५०

धामनुसंमितास्त्र १२ पूर्वार्द्धमाग्नेयमघानिलानांवर्ज्यं
चचित्राहियमोत्तरार्द्धं त्याज्येसमस्तेगमनादिकेचस्वाती
मघाचोशानसमतेन १३ तमोभुक्ततारातनोविश्वा१३
संख्याश्रमोजीवपक्षोमृतश्चापिभोग्याः॥ तदाक्रांतिभंकर्त्त
रीसंज्ञयुक्तंततोछेदुसंख्यं १५ भवेद्भुक्तनामः॥ १४ मा
र्तंडोमृतपक्षगेहिमकरः
श्चेज्जीवपक्षेशुभाः॥ यात्रा
स्याद्विपरीतगेक्षयकरेहौ

| पूर्वा ३ | कृ | म | भ | स्वा | वि | ज्ये | श्र | रिक्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६ | २१ | ११ | ७ | १४ | १४ | १४ | १४ | घटि |

जीवपक्षेशुभाः॥ ग्रस्तार्क्षमृतपक्षततःश्चन्नकरंग्रस्तात्तथा

राम
॥५०॥

| पूर्वान्हे | मध्यान्हे | अपराह्ने | पूर्वरात्रे | मध्यरात्रे | उत्तररात्रे |
|---|---|---|---|---|---|
| कृत्तिका रोहिणी विशाखाउत्तराफा० | मूलेपि ज्येष्ठायां आर्द्रायां म्लेखा च॥ | अश्विनीपुष्यः अभिजितहस्ते न॥ | मृगसिर रेवती चित्रा अनुराधा॥ | पूर्वाफा० पूर्वाखा० पूर्वाभा० भरनी० मघा॥ | स्वातिभि पुनर्वसुः श्रवणः धनिष्ठाः शततारिका॥ |

कर्त्तरीः॥ यायींदुस्थितिमान्नरविर्जयकरौतौद्वौतयो जीवगो॥१५॥

स्यात्यंतकादिवसुपोस्तकरानुराधादित्यध्रुवाविषममा स्तिथयो॥१॥३॥५॥७॥९॥११॥१३॥१५॥कुलास्युः॥

सूर्येंदुमंदगुरवश्चकुलाकुलाख्योमूलांबुपेशविधिभं दश॥१०॥षट्६ द्वितिथ्यः॥१६॥पूर्वाश्वीज्यमघेंदुकर्ण

मु·चिं·
५१

दहनद्वीशेंद्रच्चित्रास्तया ॥ स्तुकारौ कुलसंज्ञकाश्च नियमयोर्के
१२ द्वा १४ ष्ट ८ ॥ वेदै ४ र्म्मिता ॥ यायीस्याद्कुलेजयी
चसमरेस्थायीच नद्वकुल्ने संधिश्पादुभयो : कुलाकुलगणे
भूमिसयोर्युध्यत्तो ॥ ९७ ॥ स्पुर्द्धमैदस्त्रपुष्योरगवसुजलप
द्वीशमैत्राणपार्थेयाम्याजांघ्रींद्रकर्णादितिपित्रपवनोडून्स
घोभानिकामे ॥ वन्साद्रांवुध्यच्चित्रानिरित्तिविधिभगाख्या ॥ ५१ ॥
निमोक्षेयरोद्दिएपार्य्यमणेप्पेंदुविश्वांत्तिमभदिनकरक्षा

राम
५१

॥अथपंचाराद्धचक्रंमिदं॥

| धर्म्म | अर्थ | काम | मोक्ष |
| --- | --- | --- | --- |
| अस्वनी | भरणी | कृतिका | रोहिनी |
| पुष्यः। | पूर्वा० | आद्राच | उत्तरा |
| श्लेखा | भाज्ये | उत्राभा० | फा०पू |
| धनि | ष्टाच | चित्रामू | र्वाखा० |
| शात | श्रवण | लश्चअ | मृगशि |
| भिषावि | स्वातिः | भिजित | रउत्रा |
| शाखा | मघा | पूर्वाफा | खा०रेव |
| अनुरा | पांपुन | ल्गुनी | तीहस्त |
| धा॥ | र्वसु॥ | | |

निपंथादिरादौ॥१८॥धर्मगेभास्करे वित्तमोक्षेशशीवित्तगे॥धर्ममोक्षस्थितः शस्यते॥कामगेधर्ममोक्षार्थगः शोभनोमोक्षगेकेवलंधर्मगः प्रोच्यते॥१९॥अथतिथिप्रहरशुभाशुभऽवलोकनं॥पौषेपक्षेत्या॥१ दिकाद्वादशैवतिथ्योमघादौद्वितीयादिकास्ताः॥कामातिस्रः॥१३॥१४॥१५॥स्तृतीया॥३॥४॥५॥दिवच्छयानेप्राच्यादौ फलंतत्रवक्ष्ये॥२०॥शौख्यं॥१॥क्लेशो॥२॥भीति॥३॥स्वर्णाग

मु·चिं

॥५२॥

| पो | मा | फा | चै | वै | ज्ये | आ | श्रा | भा | आ | का | मा | पूर्व ॥ | दक्षिण | उत्तर ॥ | पश्चिम ॥ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | शोख्यंम्र | कलेश: | भीति० | द्रव्यप्राप्ति: |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | शून्यंच | नैस्त्यं० | नि:स्वात | मिश्रफलं |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | द्रव्यक्लेशो | दु:खभि | दुष्टाप्ति | धनंप्राप्ति |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | लाभप्राप्त | सोख्यंच | मांगल्यं | वित्तलाभं |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | लाभंभव | द्रव्याप्ति | धनंलाभं | शोख्यंभवति |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | भयभीति | लाभोभव | मृत्युद्रव्यं | द्रव्याप्ति० |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | लाभंच | काष्टंजात | द्रव्यलाभं | दु:खोभव |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | कष्टंजात | सोख्यंच | क्लेशोभव | शोख्यंजातं |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शोख्यंच | लाभोभव | सिधिकार्यं | कष्टकारिकं |
| १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | क्लेशोजात: | कष्टभव: | द्रव्यलाभं | धनलाभं |
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | मृत्युस्थिति | लाभार्थं | द्रव्यनाश | मृत्युंचभव: |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | शून्यंजातं | शोख्यभव | मृत्युभव: | कष्टंजातं |

राम

॥५२॥

मश्च ४ शून्यं ॥१॥ नैस्स्वं ॥२॥ निस्वता ॥३॥ मिश्रता च ॥४॥ द्रव्य

क्लेशः ॥१॥ दुःखमिष्टाप्ति ॥३॥ रर्थो ॥४॥ लाभ ॥१॥ सौख्यं ॥२॥ मं

गलं ॥३॥ वित्तलाभं ॥४ ॥ २१॥ लाभो ॥१ द्रव्याप्ति ॥२॥ धनं ॥३॥

सौख्य ॥४॥ मुक्तं ॥ भीति ॥१॥ लाभो ॥२॥ मृत्यु ॥३॥ रर्थागम ॥४॥ श्च

लाभः ॥१॥ कष्टं ॥२॥ द्रव्यलाभो ॥३॥ अतिदुःखं ॥४॥ कष्टं ॥१॥ सौ

ख्यं ॥२॥ क्लेशलाभो ॥३॥ सुखं च ॥४ ॥ २२॥ शौख्यं ॥१॥ लाभो ॥२॥

कार्यसिद्धि ॥३॥ श्चकष्टं ॥४॥ क्लेश ॥१॥ कष्टासिद्धि ॥२॥ रर्थो

२ धनं च ४ मृत्यु ॥१॥ लाभो ॥२॥ द्रव्यनाश ॥३॥ श्चशून्यं ॥४॥

103

शून्यं ॥१ सौख्यं ॥२ मृत्यु ॥३ रत्यंतकष्टं ॥४ ॥२३॥ तिष्यर्क्षवार
युतिरादि ७ गजा ८ ग्नि ३ तष्टास्यानत्रये त्रविधोतिप्रथ
मेतिदुःखी मध्येधनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्यात्स्यानत्रयेंक
युजिसौख्यजयौ निरुक्तौ ॥ २४ ॥ रवेर्भतो ज्ञभोन्मितिर्नगा ॥७
वशेषिताद्य ॥२॥ गाः ॥७ मदाडलोनशास्यते त्रि ॥३॥ षण्मिता
द्भ्रमो भवेत् ॥२५॥ शशांकभं सूर्यभतोत्र गण्यं पक्षादितिथ्या
दिनवासरेण ॥ युतं नवाप्तं ॥९ नगा ॥७ शेषकं चेत्स्याद्वि
वरं तत्र गमनेति शस्तम् ॥ २६ ॥ मू॰ पंचां ॥५ क ॥ ॥ द्यं

॥२ गा ६ दिग्व १०॥ त्रि ३॥ सप्त ७॥ वेदा ४॥ द्वे ८॥ शा ११॥ कर्कस्य

१२ घातारव्यचंद्रः॥ मेषादिनां राजसेवा विवादे वर्जे युद्धा

धेच नान्यत्र वर्ज्य॥ २७ गो २ स्त्री ६॥ घे घाततिथिस्तु पूर्णा

५ १० १५ भद्रा॥ २ १२ ७ नृयु ३ कर्कटके ४ धनं

दा॥ १॥ ६॥ ११॥ कौर्प्या ८ जयौ १ नक्रे १० घटे ७ च रिक्ता॥ ४॥ ९ १४ जया॥ ३॥ ८॥ १३ धनु ९ कुंभा॥ १३ शहृरो नरास्ता

| अथ चंद्र | मे | वृ | मि | क | सिं | कं | तु | वृ | ध | म | कुं | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घातरासा | १ | ५ | ९ | २ | ६ | १० | ३ | ७ | ४ | ८ | ११ | १२ |
| नक्षत्रघात | म | ह | स्वा | अ | मू | श्र | श | रे | भ | रो | आ | पुष |
| वाराघात | सू | श | चं | बु | श | श | वृ | शु | शु | भौ | वृ | शु |



105

मु॰चिं॰

॥५४॥

२५॥ नक्रे सौम्ये गो॥ २॥ द्हरि॥५॥ स्त्रीषु॥६॥ मंद ३॥ स्त्र्यंशो द्वंद्वे॥ ३॥ कीटे जिभे

१॥ रा स्त्र कर्के॥ ४॥ शुक्रः कोदंडालि॥ ८॥ ९॥ मीनेषु॥ १२॥ कुंभे॥ ११॥

| राशि | २।६।१२ | ३।४ | ८।१।१०।७ | | ९।११।५। | रास्य॥ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तिथिः | ५ १० | २ ७ | १ ६ | ४ ९ | ३ ८ | तिथिघा |
| घातः | १५ | १२ | ११ | १४ | १३ | तः॥ |

जूके॥ ७॥ जीवो घातवारा न शस्ताः॥ २९॥ मघाकर स्वाति मैत्रेः मूलश्रुत्यं बुपांत्यभं॥ याम्याब्रा स्ले शा सार्पं च मेषाद्ये घातचंद्रं न सत्॥ ३०॥ नव भूम्यः॥ ९॥ १॥ शिववह्नि यो॥ ११॥ ३॥ क्ष विश्वे॥ ५॥ १३॥ र्कैकृता॥ १२॥ ४॥ शक्रा॥ १४॥ रसा द्री सुरंगतिथि॥ ७॥ १५॥ द्विदिशो॥ २॥ १०॥ मा॥ ३॥ वशाव॥ ८॥ स्त्र पूर्वतस्तु तिथयः शन्मुखवाम गा न शस्ताः॥ ३१॥ कौबेरीतो

राम

॥५४॥

अथयोगिनीचक्रम्॥

| ईशान ८।३० गंगानाम | पूर्व १।९ ब्रह्माणी | आग्नेय ३।११ कौमारी |
| --- | --- | --- |
| उत्तर २।१०। इन्द्राणी | इतियोगिनीचक्रं | दक्षिण ५।१३ वाराही |
| वायव्य ७।१५ चामुंडा | पश्चिम ६।१४ माहेश्वरी | नैऋत्य ४।१२ नारायनी |

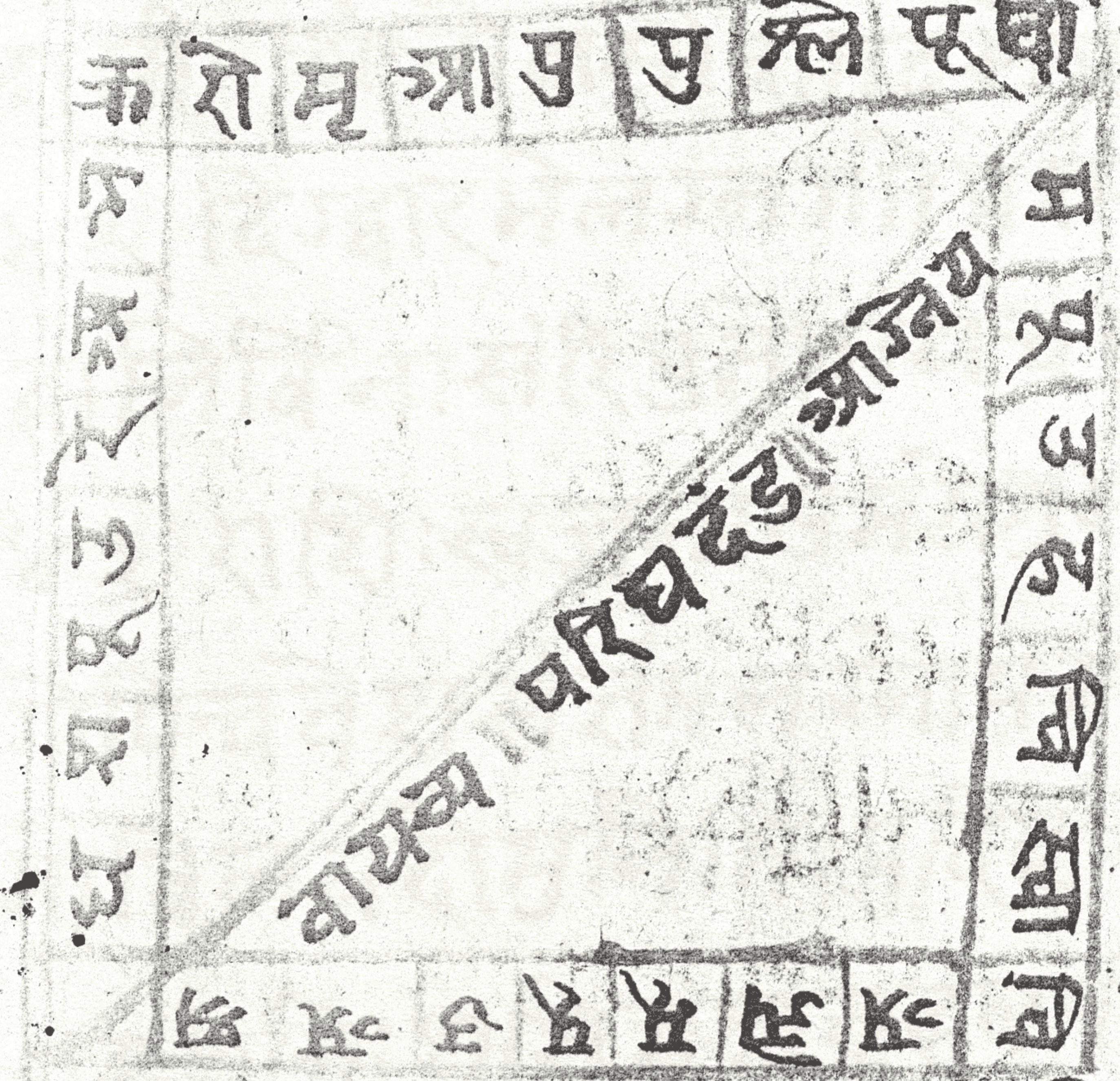
वैपरीत्येनकालो: वारकीद्ये
संमुखेतस्यपाश:॥ रात्रौवैतौवै
परीत्येनगण्पा: यात्रायुद्धेसन्मु
खेवर्जनीय॥३२॥ पूर्वादिषुच
तुदीक्षीसप्तसप्तानलक्षत:॥
वायव्याग्नेयदिक्संस्थंपरि
घंनविलंघयेत्॥३३॥ अग्ने
दिशांनृपप्रयात्पुरुहूतदिग्नेचंद्रैवप्रदक्षिणगताविदशो
यकृत्ये॥ आवश्यकेपिपरिघंप्रविलंघ्यगच्छेच्छूलंविदाय

यदि दिक्तनुसंधिरस्ति॥ ३४ मेनार्कयुग्मात्के स्विनगैर्निरु
क्ताः यात्राप्रभाशर्वदिशासुतरैः॥ वक्रीग्रहः केंद्रगतोस्य व
र्गो लग्ने ॥ दिनं चास्य गमेति शिष्टैः॥ ३५ सौम्यायने सूर्यवि
धूत दोत्तरे प्राचीं व्रजेत्तौ यदि दक्षिणायने॥ प्रत्यग्यमाशांचत
यो र्दिवानिशं भिन्नायनत्वेयवधोन्यथान्यथा नवेतरा॥ ३६ उदेति
यस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमादाथ ककुब्जचक्रे॥ त्रिधोच्य
ते संमुख एव शुक्रो यत्रोदितस्तांनु दिशं न यायात्॥ ३७ वक्रा
स्तनीचोपगते भृगोः सुते राजा व्रजंयाति वशं हि विद्विषां॥ बुधो
नकूलो यदि तत्र संचयन् रिपून्जयेनैव जयः प्रतीं दुजे॥ ३८॥



108

अथपरिघचक्रम् ॥ ७ ॥




यावच्चंद्रः पूर्वभात्कृतिकाद्येपादे भ्रकों धोनदुष्टोग्रदक्षे ॥ मध्येमार्गे मार्गवास्तेपिराजान्नावतिष्टेसं मुखेत्वेपितस्य ॥ ३८ ॥ कुंभकुंभां पदेपदे ॥ ३९ ॥ जनिलग्नजन्मभ वतिश्रुत्ग्रहो ॥ भवतस्तदातदु दयेशुभोगमः ॥ अथमीनउत्तवा तदंशाके ॥ चलितस्यवक्रमिहा वर्त्यजायते ॥ ४१ ॥ जन्मराशितनुतोष्टमेथवास्वारिभाव्यरिपु नेतनुस्थे लग्नगास्तदधिपायदाथवा स्पुगतं द्विर्न्नपतेमृतिः

मु॰चिं॰

५६

प्रदं ४१ लग्नेचंद्रेवापिवर्गोत्तमस्थेयात्राप्रोक्तावांछितार्थैकदात्री॥ अंभोराशौवातदंशेप्रशस्तंनौकायानंसर्वसिद्धिप्रदायि ४२ दिग्द्वारभेलग्नगतेप्रशस्तायात्रार्थदात्रीजयकारिणीच हानिर्विनाशंरिपुतोभयंचकुर्यात्तदादिक्प्रतिलोमलग्ने ४३ राशिःस्वजन्मसमयेशुभसंयुतोयोयस्वारिभान्निधनगोपिचवेशसंज्ञं॥ लग्नोपगःसगमनेजयदोथभूपयोगेगमोविजयदोमुनिभिःप्रदिष्टः ४४ सूर्यःसितोभूमिसितोथराहुःशनिःशशिज्ञश्चवृहस्पतिश्च॥ प्राच्यांदितोदिक्षुविदिक्षुचापिदिशामधीशाःक्रमशःप्रदिष्टाः ४५ केंद्रेदिगधीशे

राम

५६।



110

गच्छेद्वनीशः॥ लालाटिनि तस्मिन्नेयादस्सिनां ॥ ४६ ॥ प्रा

च्यादीतरणिस्तनौ ॥ १ भृगुसुतो लाभव्यये ॥ ११ ॥ १२ भूसु

तः कर्म १० स्थोथतमोनवाष्ट ॥ ९ ॥ ८ मग्रहे सौरिस्तथास

प्तमे ॥ ७ ॥ चंद्रः शत्रुग्रहात्मजेपिच ॥ ५ ॥ ६ ॥ वुधः पाताल

गो ॥ ४ ॥ गीष्पते ॥ वित्तभ्रातगृहे ॥ २ ॥ ३ विलग्नभवनाललला

| अष्टदिक्षु | पूर्व | आ | द | नै | प | वा | उ | ई |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एषुस्था | १ | ११ | १० | ९ | ७ | ५ | ४ | २ |
| नेलग्नम् ॥ | ० | १२ | ० | ८ | ० | ६ | ० | ३ |
| स्वादयो ललः | सू | शु | मं | श | चं | मं | बु | वृ |

टिकाकीर्तिता ॥ ४७ मृगेग

त्वाशिवेस्थित्वादितौ गच्छेन्न

जयेद्रिपून्न ॥ मैत्रे प्रस्थाय शा

क्रे च स्थित्वा मूले व्रजंस्तथा ॥ ४८ ॥

मु.चिं.
५७

प्रस्थायहस्तोनिलत्रक्षुधिष्ठेस्थित्वाजयार्थीप्रवशेद्विदैवे॥
वस्वंत्यपुष्येनिजसीम्निचैकरात्रोषितःक्ष्मांलभतेवनीश॥४९
उषःकालेविनापूर्वांगोधूलिःपश्चिमांविना॥ विनोत्तरांनिशी
थःसन्यानेयाम्यांविनाभिजित्॥५०॥ लग्नाद्भावाः क्र
माद्देहं १ कोश॥२ धानुष्क३ वाहनं ४ मंत्रो ५ अरि ६
मार्ग ७ आयुश्च ८ हृत्त ९ व्यापारा॥१०॥ गम ११ व्य
या॥१२॥ ५१ केंद्र १ ४ ७ १० कोण ५ ९॥ ५ सौम्यखेट
शुभास्युर्यानेपापास्त्र्याय ३॥११॥ षट् ६ रवे १० पुचंद्रः॥
राम
॥५७॥



112

नेशोलग्नात्पारिरंध्रे ॥१॥१२॥६॥८॥ शनिरवेस्तो भुक्कोल

ग्नेरन्नगा ॥७॥ त्पा ॥१२॥ रिरंध्रे ॥८॥ ५१॥ लग्नांकोशा ॥२॥ धा

नुष्कं ॥२॥ वादा ॥ नग ॥७॥ आयु ॥८॥ श्चहत्ता ॥९॥ व्यये ॥१२॥ ५२

योगात्सिधिर्द्धरणीयत्तिनां ॥ ५३॥ सद्जे ॥३॥ रविर्दशमभे

॥१०॥ शशीतथाः शनिमंगलौरिपु ॥६॥ ग्रहेसुतंसित ॥१॥५ हि

बुके ॥४॥ बुधोगुरुरपीहलग्नगः सजयत्परीन्प्रचलितो

न्चिरान्नृपः ५४ भ्रांतरि ॥३॥ सौरिर्भूमिसुतोवैरिणिलग्नेदे

वगुरुः आपुगतेकैर्शत्रुजयश्चेदनुकूलोदैत्यगुरुः ॥५५

मु·न्विं·
५८

तनौजीवइंदुर्मतौ ८ वैरि ६ गोर्कः प्रयातो मरीद्रोजय
त्येवशाकन् ॥५६॥ लग्नगतः स्याद्देवपुरोधा ११ लाभधन
स्थेः शेषनभोगे ॥५७॥ घूने चंद्रेशमुदय १ गोर्के जीवेस्त्रके
विदिधनसंस्थे ॥ इंदुयोगश्चल्लनरेज्येताशत्रून् गरुडइवा
हीन् ५८ वित्तगतः शशिपुत्रो भ्रातरि ३ वासरनाथः लग्न
गते भृगुपुत्रेसुशलभाइवसर्वे ॥५९॥ उदयेरविर्यदिशौरी राम
रि ६ गः शशि दशमेपि ॥ वसुधापतिर्यदियाति रिपवाहनीव ५८
शमेति ६० तनौ १ शनिकुजौ रविर्दशममे १० बुधोभृगुसु

तोपिलाभ ॥ ११ दशमे १० त्रि ३ लाभ ११ रिपु ६ गे पुभूसु

तशनीगुरुर्ज्ञभृगुजास्तथा बलयुताः ॥ ६१ ॥ समुदयगे १ वि

बुधगुरौ मदने गते हिमकिरणे ॥ हिबुक ४ गतौ बुधभृ

गुजौ सहज ३ गताः खलखचराः ॥ ६२ ॥ त्रिदश गुरुस्तनु

१ गो मदने ७ ॥ हिमकरणेरविराय ११ गतः ॥ सित श

शिजावपि कर्म १० गतौ रविसुतभूमसुतौ सहजे ॥ ६३ ॥

देवगुरौ वा शशिनि तनुस्थे १ ॥ वासरनाथे रिपुभवनस्थे

पंचमगे हि हिमकरपुत्रः कर्मणि ॥ १० सौरिः सुहृदि ४ सित

115

मु.चिं.

५८

श्च ॥ ६४ ॥ हिमकरणस्तोवलीचेत्तनो ॥ १ ॥ त्रिदशपतिगुरुर्दि
केंद्रस्थितः ॥ १२ ॥ ग्रहसहज ॥ ३ ॥ रि ॥ ६ ॥ धर्म ॥ ९ ॥ स्थितोःयदि
चभवतिनिर्बलश्चंद्रमाः ॥ ६५ ॥ अशुभरवगैर्धनवा ॥ ९ ॥ शु ॥ च
मदस्थे हिबुक ॥ ४ ॥ सहोदर ॥ ३ ॥ लाभग्रहस्थो कविरिह
केंद्रगगीष्पतिदृष्टोवसुचयलाभकरः खलुयोगः ॥ ६६ ॥
रिपुलग्न ॥ १ ॥ कर्म ॥ १० ॥ हिबुके ॥ ४ ॥ शशिजे परिवीक्षितेशुभ
नभोगमने ॥ व्यय ॥ १२ ॥ लग्नंमन्मथ ॥ ७ ॥ ग्रहेषु जयप
रिवर्जितेशुभनामधरे ॥ ६७ ॥ लग्नेयदिजीवःपापाय

राम

५८

दिलाभे ११ कर्मण्यपि १० वाच्यो ज्ञात्याधिगमः स्यात् ॥
द्यूने ७ बुधः शुक्रे चंद्रो हिबुके वा ४ तद्वत्फलमुक्तं सर्वैर्मु
निवर्यैः ६८ रिपु ६ तनु १ निधने च शुक्रजीवेंदवो ल
शबुधश्च गुजो तूर्य ४ गेहे स्थितो मदन ७ भवनगश्चंद्र
मा वा बुग ४ शशिसुत भृगुजांतर्गतः श्चंद्रमा ६९ सित
जीवभौमबुधभानुतनूजा लग्न १ मन्मथा ७ रि ६ हिबु
क ४ त्रि ३ गृहे चेत् क्रमतो रि ६ सोदय ३ खा १० शात्र
व ६ होरा १ हिबुका ४ य ११ गे गुरुदिने खिलखेटैः ७० ॥

सहजे कुजो निधनगश्च भार्गवो मदने ७ बुधो रविररौ
द्वे तनौ १ गुरुः ॥ अथचेत्सुरीज्यशित भानवो जलत्रि ३ ग
तारिसोरिरुधिरोरिपु ६ स्थितौ ॥ ७१ एकोज्ञेज्यशितेषु पंच
म ५ तपः ९ केंद्रेषु १ ४ ७ १० योगस्तदा द्वौचेत्तेष्व
धियोगएषुसकलायोगाधियोगस्मृत ॥ योगेक्षेममथा
धियोगगमनेक्षेमंरिपूनांजयं ॥ चाथोक्षेमयशोवनीश्चल
भतेयोगाधियोगव्रजन् ॥ ७२ इषमासशितादशमीवि
जयाशुभकर्मसु ॥ शिद्धिकरीकथिता ॥ श्रवणर्क्षयुतासु

तरांसुभदा॥ नृपतेस्तुगमेजयसिद्धिकरी॥ ७३ चेतोनि
मित्तशाकुनैरतिसुप्रशस्तौ॥ तात्वाविलग्नवलमुर्व्यधिपः
प्रयाति॥ सिधिर्भवेदथपुनःशाकुनौद्दिनोपि॥ चेतोविशु
द्धिरधिकानंचतांविनेयात्॥ ७४॥ व्रतवंधनदैवतप्रति
ष्ठाकरपीडोत्सवसूतिकासमाप्तौ॥ नकदापिचलेदकाल
विद्युद्ध्वनि वर्षात्दिनेपिसप्तरात्रं॥ ७५॥ महीपतेरेकदि
नेपुरात्पुरे॥ यदाभवेतां गमनप्रवेशकौ॥ नवारभूलप्र
तिशुक्रयोगिनीं॥ विचारयेन्नैवकदापि पंडितः॥ ७६॥ प्र

मु॰चिं॰
६२

वेशान्निर्गमं तस्मान्प्रवेशं नवमे तिथौ ॥ नक्षत्रे च तथा वा
रे नैव कुर्य्यात्कदाचन ॥ ७७ ॥ यद्येकस्मिन्दिवसे महीपतेर्नि
गमः प्रवेशोस्ति ॥ तर्हि विचार्यः शुद्धिर्याप्रवेशकालो नया॰
त्रिकस्तत्र ॥ ७८ ॥ अग्निं हुत्वा देवतं पूजयित्वा नत्वा विप्रान्न
र्चयित्वा दिगीशं ॥ दत्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगीशं ध्यात्वा चित्ते
नृपतिपालो भिगच्छेत् ॥ ७९ ॥ कुल्माषांस्तिलतंदुलान पि तथा
माषांश्च गव्यं दधि ॥ त्वाज्यं दुग्धमथैनमांसमपरं तस्यैव वर्ज्जी
रक्तं तथा ॥ तद्वत्पायसमेव चाषपभल्लं मार्गं च शासं तथा

राम
६१

120

पाष्टिकांचप्रियंगुपूपमथवाच्चित्राँडजान्सत्फलं ॥ ८० ॥ कौर्मं
शारिकगौधिकंचपललंलाल्पंदद्विष्यंततः । वङ्गसंकृषरा
न्नमुद्गमपिवापिष्टंयवानांतथा ॥ मत्स्यान्नंखलुचित्रतान
मथवादध्यान्नमेवंक्रमाद्भक्ष्याभक्ष्यमिदंविचार्यमितिमा
न्भक्ष्येयवालोकयेत् ॥ ८१ ॥ आज्यंतिलोदनंमत्स्यंपयश्चा
पियथाक्रमं ॥ भक्ष्ययेद्दोहदंयश्पमाशांपूर्वादिकंव्रजेत् ॥
८२ ॥ रसालांपायसंकाजींश्रितंदुग्धंतथादधि ॥ पयोश्रितं
तिलान्नंचभक्षयेद्वारदोहदं ॥ ८३ ॥ पक्षादितोर्कदलतंदु

मु·चिं

दर

| अश्व | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | प्य | श्ले | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | उ | अ | श्र | ध | श | पू | उ | रे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अथभक्ष्याभक्ष्यनमाहा | अभनाश्वित्रमाखा | तिलतंदुलं | माषाश्च ४ | गव्यंदधि | आज्यंघृतम् | दुग्धम् ॥ | हरिणमांशं | हरिणरक्तं | पाथशम् ० | चाखमाशम् ॥ | मृगमाशम् | शशमाशम् | षष्टिकान्नम् | प्रियंगुमांशं | अपूप ४ ४ | चित्रपक्षी ० ० | उत्तमफलं | कूर्ममांशम् | शारिमांशम् | गोधामांशम् | शल्लमांशम् | हविष्पान्नम् | कृशरान्नम् | मुध्यन्नमृ ४ | यवपिष्टंच | मत्स्यान्नंच | चित्रान्नंच | दध्यान्नंइति |

लवारि २ सर्पिश्चाएणां ४ हविष्यमपि ५ हेमजलं ६ त्वपू
पं ७ भुक्त्वाव्रजेद्दुचिकं ८ मंवुच ९ धेणमूत्रं १० यावान्न
११ पायस १२ गुडा १३ मत्स्यगंच १४ मुजान्न १५ ८४ राम
उधत्यप्रथमतएवदक्षिणंघ्रिंद्वाविंशत्पदमभिगत्पदिसस्य दर
यानं आरोहेतिलघृतहेमताम्रंपात्रंदत्वादोगणकवरायप्र

गच्छेत् ८५ प्राच्यां गच्छेदृजेनैव दक्षिणस्यां रथेन च। दि

शि प्रतीच्यामश्वैस्तथोदीच्यां नरैर्नृपः ॥ ८६ देवगृहाद्गु

रुशदनाद्वास्वगृहान्मुख्यकलत्रैः गृहाद्वा ॥ प्राप्य हविष्यं

विप्रानुमतः प्रस्थानं मंगलमेयान् ॥ ८७ कार्ये दै

रि हगमन

| रवि | चंद्र | भौम | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | पूर्व | दक्षि | पश्चि | उत्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रसाल शिखरिणि | पयश्च | कांजी | वर्तिं दुग्धं | दधि इति | अक्ष घितं दुग्धं | तिलोदनं | सर्पिघः ॥ | तिलोदनं | मत्स्यं च | मुग्धः |

सम्यक् दिव्ले बोच्च। क्षौ

दं चामलफलमाशुच्चालनीयं सर्वेषां भवति पदे च हति

यं वा ८८ गेहाद्गेहांतरमपि गमस्त्रर्हियात्रेति गर्गाः

मु॰चिं
६२

शीघ्रः सीमांतरमपि भृगुर्वाण विक्षेपमात्रं । प्रस्थानं स्यादि
ति कथयते यो भरद्वाज एवं यात्राकार्यविहिरिह पुरात्स्या
द्वसिष्ठोब्रवीति ॥ ८४ ॥ प्रस्थानमत्र धनुषां हि शतानि पंच के
चिद्व्यतद्वयमुशंति दशैव चान्ये । संप्रस्थितो यदद्रमंदिर
तः प्रयातो गंतव्य दिक्क्षुतदपि प्रयतेन कार्यं ॥ ८५ ॥ प्रस्था
ने भूमिपालो दशदिवशमभिव्याप्य नैकत्र तिष्ठे । त्सामं
तः सप्तरात्रं तदितरमनुजः पंचरात्रं तथैव । ऊर्ध्वं गच्छे
त्शुन्यादेशय गमनदिनात्सप्तरात्राणि पूर्वं चाशाक्तौ तदि

राम
६२

नेसौरिपुविजयमन्नामैथुनं नैवकुर्यात् ॥ ९१ ॥ उग्धत्या

ज्यं पूर्वमेव त्रिरात्रात् क्षौरं त्याज्यं पंचरात्राच्चपूर्वं ॥ क्षोद्रं

तैलं वासरेस्मिन्वमिश्चत्याज्यं यत्नाद्भूमिपालेन नूनं ॥

९२ भुक्ता गच्छति यदि चेत्तैलं गुड क्षीर पक्कमांशानि

निवर्त्तते सरुगा स्त्री द्विजमवमान्य गच्छ तो मरणं ॥

९३ यदि मासाच्चतुर्षु पौषमासादिषु वर्षा दिव्य वेदका

लवृष्टिः पश्चमर्त्यपदांकिता नयावद्धस्तु धास्यानदि

मु·चिं· ६४

तावदेवदोषः ॥८४॥ अल्पायां वृष्टौ दोषोल्पो भूयस्यां दोषो भू
यान् जीमूतानां निर्घोषो वृष्टौ वा जातायां भूपः सूर्येंद्वो
बिंबो सौवर्णे कृत्वा विप्रेभ्यो दद्यात् दुःशाकुंभे साज्यं सुवर्णं द
त्वा गच्छेत्स्वेच्छाभिः ॥८५॥ विप्राम्बेन्न फलान्नदुग्धदधिगोसिधा
र्थपक्षां वरं वेश्यावाद्य मयूरश्चाषनकुलाबद्धैकपश्वामिषं
राद्धाकं कुम्भे क्षुपूर्णं किल शंखत्राणि मृत्कं न्नकारत्नोस्त्री
प सितोक्षम घससुतस्त्री दीपवैश्वानराः ॥८६॥ आदर्शांज
न धौतवस्त्र रजको मीनाज्य सिंहासनं ॥ शावं रोदनवर्जि

राम ६४

126

तं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनं ॥ भारद्वाजनयानवेदन्निन
दोमांगल्यगीतांकुशाः दृष्ट्वासत्फलदः प्रयानसमयेरिक्तोघ
टम्चानुगः ॥ ८७ ॥ वंध्याचर्मतृषास्थिसर्पलवणांगारेधनक्ली
वंविट्तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिताव्यंगक्षुधार्त्तास्रक्स्त्रीप
ष्पंशरटःस्वगेहदहनंमार्जारयुद्धंक्षुतं ॥ ८८ ॥ कार्पासीगु
डतक्रपंकविधवाकुब्जाःकुटुंवेकलिः ॥ वस्त्रादेस्खलनं म

मु॰चि॰
६५

खलनंलुलायसमरं रूक्षानि धान्यानि च ॥ कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेति रुद्द्गर्भिणी मुंडार्द्रावरदुर्वचौंधवधिरोद्दक्यानदृष्टाशुभाः॥९९॥ गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं। नो शब्दो न विलोकनं च कपिऋक्षानां ततो व्यस्तयः। नद्युत्तारभयः प्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे व्यस्ताः शकुनाः नृपेक्षणे विधौ यात्रोदितास्सोभनाः॥१००॥ वामांगे कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला॥ पिंगला छुछुका श्रेष्टा शिवा पुरुषः संज्ञिताः॥१॥ छिक्करः पिप्पको भासः श्रीकंगेवानरो

राम
६५॥

रुरुः ॥ स्त्रीसंज्ञकाः काकस्तक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाः शुभागर

प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्रायां मृगपक्षिणः ॥ ओजा मृगा व्रजं

तोतिधान्या वामे खरस्वनः ॥ ३ ॥ आद्ये दुःशकुने स्थित्वा प्रा

णानेकादश व्रजेत् ॥ द्वितीये षोडशः प्राणांस्तृतीये न कचि

त् व्रजेत् ॥ ४ ॥ यात्रानिवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं मृदुध्रुवैः क्षिप्रच

रैः पुनर्गमः ॥ दीशे नले दारुणभे तथोग्रभे स्त्रीगेहपुत्रात्म

विनाशनं क्रमात् ॥ ५ ॥ अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भव

शूलसंमुखसितज्ञदिक्कया ॥ भग्नवक्रतादि परिघाख्यदंड

मु॰चिं॰
६६॥

कस्तंतु जाद्यशौचमपि चोत्सवादिकं॥८॥ मृतपक्षरिक्तरवि

१२ तर्क ६ संख्यकास्तिथयस्तसौरिरविभौमवासराः॥ अ

पिवामपष्टगविधुस्तथाडलो वसुपंचकाभिजिदयापि दक्षि

णे ७ लग्ने जन्मर्क्षतंन्वोमृत्तिगृहसहितर्क्षाच्च पष्टं तदी

शावा लग्ने कुंभमीनर्क्ष नवलवतनूचापिएष्टो दयंच॥

| विशाखा | कृत्तिका | दारुण | उग्रभेः॥ |
|---|---|---|---|
| स्त्रीनासः | गृहनाशः | पुत्रनाशः | आत्मनाशः |

एष्टाशासंस्थमक्षं दरामश

निरयोशायमेचापिकाव्यकें

द्रेवक्राब्धवक्रियग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाश्चनेष्टाः १०॥

राम
६६॥

इति श्रीदैवज्ञानंदसुतदैवज्ञरामविरचिते मुहूर्तचिंताम
णौ यात्राप्रकरणम् ॥ नवमः ॥ ९ ॥ यद्भं द्यो २ क ५ सुते
५ श ११ दिग्मित ॥ १० मंशो ग्रामः शुभो नाम भात्संनगोद्वि
गुणं विधाय परवर्गाढ्यं गजे ॥ ८ ॥ शेषितं ॥ काकिन्यस्त
नयोश्चतद्विवस्तोपरमाः धिकाः सोर्थदो यद्वारं द्विजवैश्य
सूद्रनपरत्सीमां हितं पूर्ववत ॥ १ ॥ गो २ सिंह ५ नक्र १०
मिथुनं ३ निवेशोन्नमध्ये ग्रामस्य पूर्वककु मौलि ८ झ
खां १२ गना ॥ ६ ॥ श्च ॥ कर्को ४ ॥ धनु ९ ॥ स्तुल ७ ॥ मेष १

मु·चिं·
६७

घटा॥११॥स्वात्तद्व॥द्वर्गाः स्वपंचमप्राग्वलिनः रैंद्र्याः॥२॥एको
न्नते एकर्क्षहता धितिघ्यो॥१५ २॥ रूपो १ न्नितेच्छायदत्तं दुना
गैः॥ युक्ताद्यने॥१७॥श्चापियुताविभक्तारूपास्त्रिभिः॥२॥शो
धमितो हिपीड॥३॥स्वच्छायनक्षत्र भवोथदैर्घ्य हस्त्यादिस्त
तिर्विस्तृति हस्त्र दीर्घता॥आया ध्वजो धूम्र हरिश्वगोरव
रेत्र ध्वांक्षकाः पिंड इहाष्टशेषते॥४॥ध्वजादिका सर्व दिशि
ध्वजो मुखं कार्यं हरौ पूर्वयमोत्तरे तथा॥ प्राच्यां वृषे प्राग्य
मयोर्गजेथवा पश्चाद् उदक्पूर्वयमे द्विजादितः॥५॥ग्रहेश

राम
६७

| ईशान शबगं ४ मेष १ कुं ११ स्वामीरासीम् ॥ | पूर्व अबगं १९ गरुडपति वृश्चिक ८ | अग्नि कवर्ग ५ मार्जारपतिमीन १२ ॥ ॥ |
| --- | --- | --- |
| उत्तर यबर्ग मृगपतिरासि मेष १ | ग्राममध्ये नवसेयु: वृ: मि: सिं: म: | जाम्य चवर्ग ५ सिंहपति कंन्या ६ |
| वायव्य पबर्ग ५ मूसा पतितुला ७ | पश्चिम तवर्ग सर्पपतिधनु ॥९॥ | नैऋति टवर्ग ५ स्वानपतिकर्क ४ |

तस्त्रीसुखवित्तनशोकेंद्वीज्यशुक्रेविवलेस्तनीचे॥ कर्तुस्थितिर्नो विधुवासुनोर्मेपुरस्थितेपृष्टगोस्वनिःस्पात्॥ दी॥ नं

नागाचातश्चव्ययई रितोसौ ध्रुवानिनामाक्षरयुक्तसपिंडः॥ तश्चेगुणौः॥ ३ रिंद्रकृतांत ७ ॥ भूपाद्यंशाभवेशुर्नस्तु

मु॰ चिं॰

९९

मोंत्तकोत्र ॥७ दिक्षु पूर्वादितः शाला ध्रुवाम्न ॥१ द्वे २ कृता ॥ जा ८

साला ध्रुवांकसंयोगः सैको ॥१ वेस्मं ध्रुवादितं ॥८ ध्रुव ॥१

धान्यं ॥२ जय ॥३ नंदौ ॥४ खर ॥५ कांतं ॥६ मनोरम ॥७ सु

मुखं ॥८ दुर्मुखं ॥९ उग्रा ॥१० हित ॥११ धनद ॥१२ नाशे ॥१३

माक्रंद ॥१४ विपुल ॥१५ विजया ॥१६ ख्यं ॥८ तिष्य ॥१५

को ॥१२ रा ॥८ ष्टि ॥१६ गो ॥५ रुद्र ॥११ शक्रे ॥१४ नामाक्ष

रत्रयं ॥ भ्रा ॥१ घ ॥२ व्धी ॥४ ष्वंग ॥५ ॥६ दिग्व ॥१० न्हि ॥३ ॥

विश्वेष ॥१३ द्वौ ॥२ नगे ॥७ ध्धयः ॥४ ॥१० पिंडे त्नवा ॥९ को

॥९ ग ॥६ गजा ॥८ ग्निं ॥३ नगा ॥७ नागा ॥८ व्धि ॥४ ना

राम

द्व

| दिशा | पू | द | प | उ |
|---|---|---|---|---|
| वर्न | द्विज | वेश्य | क्षत्री | शूद्र |
| द्वंद | ४ | २ | ३ | १ |
| प्रथ | ८ | ६ | ७ | ५ |
| म | १२ | १० | ११ | ९ |
| स्लो | ० | ० | ० | ० |
| कस | ० | ० | ० | ० |
| चक्रं | ०० | ०० | ०० | ०० |

गे ८ र्क्षे २७ तिथ्य १५ र्क्ष २७ खभाजभि १२०
श्च ११ आयो वारांशको द्रव्य मृएम छतिथियु
ति: आयुश्चापग्र देशर्क्ष ग्रहन्ने क्यंमृतिप्रदं
१२ गेहाधारं भे कर्क भाद्वत्त्स शीर्षे रामे २ दोर्दोवे
दभे ४ रग्रपादे: ॥ शून्यं वेदे: ४ पृष्टपादे स्थिर
त्वं रामै: ३ पृष्टे श्री युगै: ॥ ४ दक्ष कुक्षौ १२ ला
भो रामै ३ पुच्छगै: स्वामिनाशो वेदै ४ नभ्वं वा
म कुक्षौ मुखस्थे: ॥ रामै: ३ पिंडासत्तत्तं वार्क धिष्ण्याद्भ्यौ ७ रुद्रै
११ र्दिग्भि १० रुत्क्तं ह्यसत्सत ॥ १४ ॥ कुंभे कर्के फाल्गुने या मपरमु
खगृहं श्रावणे सिंहक कर्यौ पौषनक्रे च याम्योत्तरमुखसदनं गो
राज १ गेच २ कराधे मार्गयूका ७ लि ८ गेसद्भुवमृदव

मु॰चिं

६९

| क्षेत्रफलस्य ॥ | आय | वार | अंश | द्रव्य | ऋण | नक्षत्र | तिथि | योग | आयु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अथ गुणकांका | ९ | ९ | ६ | ८ | ३ | ८ | ८ | ४ | ८ |
| अथ भाजकांका | ८ | ९ | ९ | १२ | ८ | २७ | १५ | २७ | १२० |

रुणस्वातिवस्वर्कपुष्येः सूतीगेहं त्वदित्यां हरिभविधिभयोस्तत्र शास्त्रप्रवेशः ॥ १५ ॥ कैश्चिन्मेषरवौ मधौ वृषभगे ज्येष्ठे मृचौ कर्कटे ॥ भाद्रे सिंहगते घटेश्वयुजि चोर्ज्जे लौमृगे पौषके ॥ माघे नक्रघटेशुभं निगदितं गेहं तथोर्ज्जेन मातृकेन्यायां च तथा धनुष्यपि न सत् क्लाधिमासाद्भवेत् ॥ १६ ॥ पूर्वोदितः प्राग्वदनं नवम्यां दिपूत्तरास्यं त्वथ पश्चिमास्यं दर्शादितः शुक्लदलेन वम्यां दौदक्षिणास्यं न शुभं वदंति

राम

६९

१७ भौमार्करिक्तामाद्यूनेचरोनेंगेविपंचके । मघोत्तप

स्ये:शुभेगैर्हारंभस्याश्रया ॥ २१ ॥ रिगै : ईरवलै : ॥ २० देवा

लयेगेहविधौजलाशयेराहोर्मुखंसंभ दिशोर्विलोम

तः ॥ मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रि ॥ ३ भेखाते मुखा

त्पृष्ठविदिगशुभाभवेत् ॥ १९ ॥ कूपेवास्तोर्मध्यदेशेर्थना

शस्त्वीशान्यादौपुष्टिरैश्वर्यवृद्धि: ॥ नाश: सूनोस्त्रीवि

नाशोमृतिश्चसंपत्पीडाशत्रुत: स्वल्पशौख्यं ॥ २० स्ना

नस्यपाकशयनास्त्रभुजेश्चधान्यभांडारदैवतगृहाणि

| ईशान | पूर्व | अग्नि |
|---|---|---|
| पुष्टिर्भव | ऐश्वर्यं | पुत्रलाभं |
| उत्तर | ग्रहकूप | जाम्य |
| असुखम् | अर्थनाश | स्त्रीनाश |
| वायव्य | पश्चिम | नैरृत्य |
| शत्रुतः पीडा। | संपत् | गृहेश मृत्तिः |

च पूर्वतः स्युः॥ तन्मध्यतस्त्रमयनाज्यप
रिषविद्याभ्यासाख्यरोदराः रतोष ध
शार्वधामः॥२१॥ जीवार्कविधुकराशौ
चरेषु लग्नारिजामित्र ७ सुखे ४
त्रिगेषु॥ स्थितिः शातं श्पा क्रुरदांसि
ताकी रज्येत नुत्र्यंमश्रुत्ते शाते दो॥ २२

| वृषवास्तुनि | शीर्षे | ग्रहपाद | पृष्टपाद | पृष्टे | दक्षिणकुक्षि | पुच्छे | वामकुक्षि | मुखे | दूर्दंश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्यभान् | ३ | ४ | ४ | ३ | ४ | ३ | ४ | ३ | योद |
| नक्षत्राः न्यासफलानि | ग्रहदाह | मृतसून्मा | स्थैर्यम् | श्री | लाभस्वः | स्वामिनाश | दारिद्र्यं | सर्वदा पीडा | शाच्चतुर्दश श्लोकमितिः |

लग्नांब १० रायेषु॥२१॥ नगुणभान् भिः कोदेगरो

वर्षशतायुरालयं वंधौ ४ गुरुर्व्योम्नि १० शशीकुजार्क

जौलाभेतदाशीतिशमापुरालयं ॥ २३ ॥ स्वोच्चेभृगुक्केलग्नगे

वागुरौवेस्म ४ गतेथवा ॥ शनौस्वोच्चेला भगेवा लस्यायु

र्कं चिरंप्रदं ॥ २४ ॥ द्यूनं ७ वरे १० यदैकोपिपरांशस्थोग्र

होयह ॥ अव्दांतः परहस्तस्थंकुर्याच्चेदर्पोबलः २५

पुष्पेधूकवेंदुहरिसर्पजलैः शजीवेतद्वाशरनचंक्रांशुत

राज्यदंस्यात् ॥ द्वौशाम्वितक्षवसुपाशिशिवेः शमुनौवारे

सितनशपचक्रांतं धनधान्यदंस्यात् ॥ २६ सारैःकरेज्यांत्य

मघांबुमूलैः कौजेन्हि वेस्माग्निसुतार्त्तिदं स्यात् ॥ सज्ञैः क
दास्रार्यमत्वक्षहस्तैर्ज्ञस्यैव वारे सुखपुत्रदं स्यात् ॥ २७ ॥ अजै
कपादाहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानलांतकैः ॥ समंदैर्मंदवारे स्याद्
सौम्भूतयुतं गृहं ॥ २८ ॥ देहल्यां गुणाः ३ भैर्मृति गृहपतेर्मध्य
स्थितैर्वेद ४ ॥ भैः सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं
विधेयं शुभं ॥ २९ ॥ इति श्रीदैवज्ञानंदसुतदैवज्ञरामवि
रचिते मुहूर्तचिंतामणौ वास्तुप्रकरणम् ॥ अथ गृहप्रवेश ॥
सौम्यायने ज्येष्ठतपोंत्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नृपतेर्नवे गृहे

स्पाद्दे सनंह्रास्य मृदु ध्रुवोंदु भिर्जन्मर्क्षेलग्नोपचयोदयेस्थि

रे ॥ १ ॥ जीर्णेग्रहेग्न्यादिभयान्नवेपि मार्गोर्जयोः श्रावणिकेपि

सस्यात् ॥ वेशांवुपेज्यानिलवासरेषु नावश्यमस्तादिविचार

णात् ॥ २ ॥ मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलभेवास्तुलर्चनं भूतवलिं

च कारयेत् ॥ त्रिको ९ ५ ॥ केंद्रा ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ पण ॥ ११ ॥ धन

२ ॥ त्रिगैः ३ ॥ शुभैः त्रि ३ ॥ षष्ट ६ ॥ लाभौ ॥ ११ ॥ पगतैश्चपापैके

२ ॥ शुद्धांवु ॥ ४ ॥ रंध्रे ॥ ९ ॥ विजनेभमृत्यौ ॥ ८ ॥ वर्त्तारिक्तचर

दर्शचैत्रे ॥ अग्रेसुपूर्णंकलशंद्विजाश्चकृत्वाविशेद्वेश्मभकू

कष्टदं ॥ ४ ॥ वामो रविः मृत्युः ॥ ५ ॥ सुतार्थलाभतोर्के पंचमे प्राग्वद
नादिमंदिरे ॥ पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभानंदादिके याम्य
जलोत्तरायने ॥ ५ ॥ वक्रे मृ ॥ १ ॥ रविभ्रात्प्रवेशसमये कुंभेऽग्नि
दाहः कृत्ता ॥ ४ ॥ प्राच्यामुद्वसनं कृत्ताः ॥ ४ ॥ यमगतालाभकृत्ताः
॥ ४ ॥ पश्चिमे ॥ श्रीर्वेदाः ॥ ४ ॥ कलिरुत्तरे युग ॥ ४ ॥ मित्तागर्भे विना
शो गुदे ॥ रामौ स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनला ॥ ३ ॥ कंठे त्वचे सर्वदा
॥ ६ ॥ एवं सुलग्ने स्वगृहं प्रविश्य वित्तेन पुष्पाक्षुतिघोषयुक्तम
शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान् संदापयेद्भूमिदिरं(?)पवस्रैः ॥

७॥ आसीद्धर्मपुरे षडंगनिगमाध्येतृद्विजैर्मंडितो ज्योतिर्वि-
त्तिलकः फणींद्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः । तत्तज्जातकसंहि-
तागणितकृन्मान्यो महाभूभुजां तत्कालकृतिवेधवाक्य-
विलसद्बुद्धिः सचिंतामणिः ॥ ८॥ ज्योतिर्विद्गणवंदितांघ्रि-
कमलस्तत्सूनुराशीत्कृती नाम्नानंत इति प्रथामधिग-
तो भूमंडलाहस्करः ॥ यो रम्यां जनिपद्धतिं समकरोदुष्टारा-
यध्वंसिनी टीकां चोत्तमकामधेनुगणिते ऽकार्षीत्सतां प्रीत-
ये ॥ ९॥ तदात्मजनुदारधीर्विबुधनीलकंठानुजो गणेशपा-

मू॰चिं॰
७२

दपंकजं हृदि निधाय रामाभिधः ॥ गिरीशनगरे वरेन्दुजानुजे
भुचंद्रै १५२२ मिते ॥ शाके विनिरिमादिसं खलु मुहूर्त्तचिं
तामणिं ॥ १० ॥ इति श्रीदैवज्ञानंद[illegible]सुत[illegible]कृत[illegible]रामविर
चित मुहूर्त्तचिंतामणौ गृहप्रवेशा[illegible]प्रकारः ॥
संपूर्णं शुभमस्तु ॥ संवत् ॥ १८४० ॥ ॥ श्री ॥ श्री

राम
७३

[OrderDescription]
,CREATED=21.09.20 10:33
,TRANSFERRED=2020/09/21 at 10:57:24
,PAGES=144
,TYPE=STD
,NAME=S0003632
,Book Name=M-1764-MUHURATCHINTAMANI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF

FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF
,FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF

FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF
,FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF
,FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF

FILE76=00000076.TIF
,FILE77=00000077.TIF
,FILE78=00000078.TIF
,FILE79=00000079.TIF
,FILE80=00000080.TIF
,FILE81=00000081.TIF
,FILE82=00000082.TIF
,FILE83=00000083.TIF
,FILE84=00000084.TIF
,FILE85=00000085.TIF
,FILE86=00000086.TIF
,FILE87=00000087.TIF
,FILE88=00000088.TIF
,FILE89=00000089.TIF
,FILE90=00000090.TIF
,FILE91=00000091.TIF
,FILE92=00000092.TIF
,FILE93=00000093.TIF
,FILE94=00000094.TIF
,FILE95=00000095.TIF
,FILE96=00000096.TIF
,FILE97=00000097.TIF
,FILE98=00000098.TIF
,FILE99=00000099.TIF
,FILE100=00000100.TIF
,FILE101=00000101.TIF
,FILE102=00000102.TIF
,FILE103=00000103.TIF

FILE104=00000104.TIF
,FILE105=00000105.TIF
,FILE106=00000106.TIF
,FILE107=00000107.TIF
,FILE108=00000108.TIF
,FILE109=00000109.TIF
,FILE110=00000110.TIF
,FILE111=00000111.TIF
,FILE112=00000112.TIF
,FILE113=00000113.TIF
,FILE114=00000114.TIF
,FILE115=00000115.TIF
,FILE116=00000116.TIF
,FILE117=00000117.TIF
,FILE118=00000118.TIF
,FILE119=00000119.TIF
,FILE120=00000120.TIF
,FILE121=00000121.TIF
,FILE122=00000122.TIF
,FILE123=00000123.TIF
,FILE124=00000124.TIF
,FILE125=00000125.TIF
,FILE126=00000126.TIF
,FILE127=00000127.TIF
,FILE128=00000128.TIF
,FILE129=00000129.TIF
,FILE130=00000130.TIF
,FILE131=00000131.TIF

FILE132=00000132.TIF
,FILE133=00000133.TIF
,FILE134=00000134.TIF
,FILE135=00000135.TIF
,FILE136=00000136.TIF
,FILE137=00000137.TIF
,FILE138=00000138.TIF
,FILE139=00000139.TIF
,FILE140=00000140.TIF
,FILE141=00000141.TIF
,FILE142=00000142.TIF
,FILE143=00000143.TIF
,FILE144=00000144.TIF
,